



# जीवन सन्त्र

( हिन्दी सम्पादन )



लेखक

परम कृपालु पूज्य गुरुदेव भगवत  
श्रीमद्विनय यती द्रमूरीश्वर पं० पंडितमधुप  
मुनि जयन्तविनय 'सघट्टर

प्रकाशक :

श्री यतीन्द्र-साहित्य-सदन

मरम्बती-मिहार, मातावाड़ा (गज०)

प्रातिष्ठान —

श्री फत्तुमिह लोढा

(मन्त्रार्थ)

श्री यतीन्द्र माहिल्य-मन्त्र,

मरुत्यती विहार

भीलवाड़ा ( मन्त्र )

प्रथम सुस्वरग

५५६६

मूल्य रु० १ ५० पैसा

श्री यतीन्द्र-माहिल्य-मन्त्र

भीलवाड़ा व प्रथम से

श्री हमचन्द चौहान द्वारा

मनोप प्रिन्टस नगरा, अजमेर

में मुद्रित ।

## अर्पण

निनरु पावन कर समग न मुम जनाया है डसान ।  
जिाका पावन चरणरगी में में पाया है रिधाम ।  
निनरी प्रवल रूपा न मुम का मात्म रैव प्रकाग दिया ।  
अपण मूरिनां गुरु कर 'जीवन मत्र' सुभाउ ठिया ।

चरण रंगु

अपण मूरिनां गुरु कर 'जीवन मत्र' सुभाउ ठिया ।

## “ज्ञानक्रियाभ्यामोक्ष”

जीवन और मन्त्र का सम्बन्ध समग्रतः सम्प्रथम रहा है, मन्त्र रचित जीवन में मन्त्रोपेक्षा अत्यन्त है और जीवन रहित मन्त्र में जयता अमम्भान्य है ।

हमारा जीवन राष्ट्र, धर्म और समाज के संयोगों से शाश्वत संयोजित रहा है अतएव प्रतिफल मन्त्र शक्ति की आवश्यकता रहती है, मन्त्र का मन्त्र ही मन्त्र का धारणकर्ता बनता है, राष्ट्र को राष्ट्रियता का पाठ पढ़ा सकता है और समाज का तत्त्व का संगीत सुना सकता है ।

इस देश का जीवन यत्न मय है, यत्न मन्त्रमय है, मन्त्र तन्त्रमय है, तन्त्र तपानिविद्या की अलौकिक मूर्ति है, चित्तमें विश्व के जीवा का संयोग मिल रहा है ।

प्रस्तुत पुस्तक में सुविधु गुरु श्री जयतन्त्रियजी ने जीवन के विभिन्न विचारों का विवेक योग में विद्या के विराट स्वरूप में का प्रयोग किया है वह मननीय है ।

इसी प्रकार सुनिर्णय भगवती भारती की निरन्तर उत्पत्ति करत हुए धर्मणु समृद्धि का संश्लेष करत रहे यही सगलमयी प्रेरणा है ।

दि० सं० २०२३

प० गोविन्दराम व्यास

भारतीय कृष्ण पंचमी

रत्नी (गजगदा)

गजगदा (मध्य प्रदेश)

## आमुख

पुत्र मुनिवर नेम विद्वान् लेखक की 'जीवन मंत्र' की प्राथमप्रतिष्ठ कृति क लिये मुझ जैसे ज्ञानार्थिजन को 'आमुख' लिखने का दुर्बह उत्तरदायित्व प्राप्त होना जनना मर प्रति प्रगाढ़ प्रेम होत रा ही परिचायक है। नम धरती है और प्रेम स्वयं। नेम धरती पर 'उल्टी गंगा' की उक्ति अत्यन्त चरिताध होती रणी है। शिमशिकम्।

'जीवन मंत्र' मुनिवर श्री जय त्रिपुत्रयनी मधुकर प्रणीत ज्ञान भक्ति, कम ज्ञान आदि का विचार मथन है। पुस्तक प्रणता विद्वान् एव कर्म ममन होत के अनिरिक्त सुकृति, लेखक तथा श्रेष्ठ वक्ता भी हैं अतएव विचारों का गहनता के साथ साथ भाषा की प्राणलता, भाषा की प्रौढता तथा शैली की रमणीयता सुबोधता भी प्रच्युत पुस्तक में दशनीय है।

आज क इम युग में जय कि मानव जीवन में भौतिकवाद का घुन लग गया ह, धार्मिक नैतिक व अध्यात्मिक साहित्य की स्पृहणीयता स्पष्ट है। मुनि श्री ने भी इम पुस्तक की अस्तुति में समाज क प्रति अपने कतव्य का उदार परिचय दिया है।

इममें विना मनन, पठन पाठन और लगभग बारह वर्षों क अपने जन माधु जीवन क स्वानुभवा पर आधृत जीवन क रहन महन, आचार विचार को प्रभावित करने वाली व बातें हैं ज्ञा गृहस्थी वनस्थी, जन-अनेन स्त्री-पुम्प युवा-वृद्ध प्रभति जन सभी व्यक्तिया के लिये अत्यन्त स्वर हैं जो धार्मिक व नैतिक जीवन पथ पर आहूद हैं।

सकल्प निरूप्य व धारणा-ध्यानादि की घड़ियों में जो स्फुरणाएँ होती हैं वे मिथ्यात्व की भित्तियों पर शब्दा के फरमा के मध्य तय दृष्टव्य-स्तुत्य जीवतोपम मजीब चित्र बन जाती हैं । पुस्तक का नाम 'जीवन-मंत्र' मायक है क्योंकि मंत्र की जिस दिव्य शक्ति से तन पर मन का तथा मन पर आत्मा का जयी होने का भाव निहित रहता है उसी तरह दैनिक जीवन के उदाहरणा दृष्टाता द्वारा जिन की जिन उदात्त वृत्तिया का इममें वर्णन किया गया है उनका लक्ष्य भी वही है ।

'जन' शब्द का विश्लेषण पर्याय यदि यह भी है कि 'मन' को जीवन वाला 'जन' ही जैन है तो जैन धर्म, जैन समाज जैन उभावन्धिया और जैन धर्माभिमुखी नर नागिया के लिये यह पुस्तक गौरव की वस्तु सिद्ध होगी ।

युगानुकुल सम्प्रदाय दुरामह बिलुप्त-सद्वृत्ति परायण धर्म के विशाल दृष्टिकोण को सावनाचल में ले कर अमगामी जैन माधु के रूप में पूज्य मुनिरर अपने उप नाम की सार्थक करने वाले ज्ञान पवन के 'मधुकर' रह कर 'बहुजन हिताय' 'बहुजन सुखाय' ऐसी अनेक सुन्दर कृतियों की सर्जना करते रहें यही इश्वर से प्रार्थना है ।  
इत्यलम ।

बाल निबन्ध,  
१४ नवम्बर १९९६  
राणापुर

हरिविठ्ठल त्रिपेदी  
एम ए एन टी  
'व्याख्याता'

# सम्मतिर्याँ

‘जाप करवा जेवु’

प्रस्तुत ‘जीवन मन्त्र’ पुस्तक ए सुविचारोनु सफलन छे । खेर ग्यर आ पुस्तक मने तो मन्त्रनी पेठे लाग्य लाग्य धार जाप करवा जेवु आग्यु ।

पुस्तकनी ग्याम विशेषता तो ण छ क ए सदा फाल चाली शक एयु छ । हमणा यीसमी मदी छे परन्तु भलेने श्रीशमी सदी होय के पचाममी सदी होय तो पण आ मथालाने अन आ सुबचनो ने कदी बदलवानी जरूर रहे तेम नथी ।

भारतीय सोसायटी

प० बेचरदास दोशी

अहमदाबाद

२५

‘जीवन मन्त्र’ अनेक मन्त्रोधी समर सुन्दर पुस्तक छ । त नी बाणी मा हृदय ने स्पर्शी जवानी अद्भुत शक्ति छे, कारण आ मात्र हानी के चिन्तकनी वाक् छटा नथी, आ एक तपस्वी महामना साधकना अनुभवोनो जन हितक लक्षी सारोद्गार छे । अमे आ पुस्तक हृदय पूर्वक आवका रीण छीण ।

प्रोफेसर

स्वामिनारायण आर्ट्स कलेज

अहमदाबाद

दैनिक ‘त्रय हिन्द’

कान्तिनाथ ‘आचार्य’



## राजयोगो राजमार्ग'

मुनिरात्र भी जय तविचयनी मधुकर' श्री ए आ मन्त्रोमा कोइ ने ममान ने आधार घनाया छे तो कोइमा धमनो आगरो लीधो छे । कोइने राष्ट्रनो सहारो आयो छे तो कोइने बश्रहारता पाटले तुन्ला मैदान मा वेमाप्या छ । कोइ ने कवितानी मराणे चदाव्या छे तो कोइने भक्तिना धातायगमा दुबकी नैशरायी छे, आम विविध विषयोना प्रवाहो तेमणे रानुभयशील साधु जीवनन, गंगोत्रीमा उदता कर्था छे ! गमे त मंगो माननी ते ते पवा हाना घाट पर बेमी आ मन्त्रोपु पागयण करी सिद्धि भेलवे ऐरो राजयोगनो राजमार्ग मुनिधीए उताव्यो छे ।

ना ६ भारताय विद्या मंदिर  
अहमदाबाद

प० अम्यालाल प्रेमचंद महा  
२०२१  
दापावली

## 'सन्तोष अपशो'

प्रस्तुत 'जीवन मात्र जीवन ने उन्नत बनाय, मलीनता ने नष्ट करे, धम विमुखने धमाभिमुख बनाये निरागाने आशामा उदली नाखे अने अज्ञान ने ज्ञानना किरणो अपे एया सुभाषितो नो समह छ जेमा आ गद्य हुसुमोनो, पमराट अयश्य जैन अने जैनेतर वाचकने कशुक सुफध्य वाच्यानो सन्तोष अपश ।

अहमदाबाद

शांतिलाल ना सत्यम्  
बी ए (ओनम)

## निवेदन

मन्त्र का नाम सुनने ही सबको अरुने पन का भान हो जाता है, किन्तु प्राणी के मम में मन्त्र अनेक हैं, और वे अनेक प्रकार के हैं। मन्त्र के इच्छुक भिन्न भिन्न प्रकार के होते हैं।

लक्ष्मी तथा भस्वरती की मानना का माग मन्त्र है।

स्थिरता एवं अस्थिरता को स्वरूप देने वाला मन्त्र है।

मारने और बचाने का माधन मन्त्र है।

दुस्मा को बश में करने वाला मन्त्र है।

अग्नि को शांत करने वाला मन्त्र है।

प्राणी तथा शर के भय से मुक्त कराने वाला मन्त्र है।

मन्त्र जीवन का उद्धार करने वाला है।

प्रस्तुत पुस्तक में ऐसे ही विचारा को प्राथमिकता दी गई है। मन, वचन और काया तीनों के मिश्रण का मन्त्र के साथ यदि जोड़ दिया जाय तो अपूर्व आनन्द की प्राप्ति हो सकती है।

अनुभव चिन्तन, मनन वाचन और ध्यान आदि मार भून उन्मेष्या का प्राप्ति हेतु इस 'जीवन मन्त्र' पुस्तक का सम्पन्न तैयार किया गया है।

जीवन को जीने की दृष्टि से व्यतीत करने वाले बहुत होते हैं, किन्तु जीवन की मायकता का समझने वाला की संख्या कम होती है। अतः किस प्रकार इस जीवन को सफल बनाया जा सकता है, यह बात इस पुस्तक के पृष्ठा को खोलकर उई पढ़कर और मनन कर हृदयप्राप्ति की प्राप्ति ऐसा मेरा विनम्र निवेदन है।

इस सकलन के प्रकाशन में जिन जिन स्वधर्मि  
भाइयों ने सहयोग प्रदान किया है वे यथाशक्य पात्र हैं।

राजगढ़ निवासी मा श्री बालचन्द्रजी जैन,  
साहित्य रत्न' का पूरा प्रकाशित 'जीवन मन्त्र' गुजराती  
का हिन्दी अनुवाद करने में प्रशंसनीय योग रहा है।

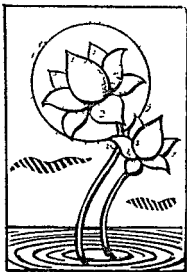
सकलन का मुद्रण कार्य करवाने की व्यवस्था  
हनु भीलवाड़ा निवासी श्री पतहसिंहजी गेडा का  
मराहनीय सहयोग रहा है।

इस 'जीवन मन्त्र' पुस्तक का सर्वत्र अधिकाधिक  
पठन-पाठन हो, ऐसी मेरी हार्दिक इच्छा है। इत्यलम्।

राजेंद्र भगत  
राजगढ़ (म० प्र०)

मुनि जयन्तविजय  
'मधुकर'





## प्रकाशकीय

'मधुय्य जन्म नहीं बरम्भार' की माधरता हेतु पूर्यपाद मुनिगत भी चयन्तविचयत्री 'मधुकर' द्वारा लिखित 'पीथन मन्त्र गुनरातो का हिन्दी अनुवाद प्रमी पाठक एवं पाठिकाभा के पठन-पाठन हेतु भी यती द साहित्य सदन, भीलवाड़ा प्रकाशित करते हुए आनन्द की अनुभूति करता ? ।

प्रस्तुत प्रकाशन पर प० श्री गोरिन्द प्रसादनी व्यास हरनी, तथापि० श्री हरिविठ्ठलनी प्रियेदी मायुभा ने अपने महत्य पूण विचार प्रकाशन की सफलता एवं लेखक के परिश्रम को सफलभूत बनाने हेतु लिख भेजे हैं, अन ये आदरणीय हैं ।

भी यती-द्र-साहित्य-सदन समय समय पर सच-कोटि क साहित्य प्रकाशन कर जन मानस क हाथों में पहुँचाता रहा है । मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह 'जीवन मात्र, पुस्तक त्रिम च्च उद्देश्य स प्रकाशित की गई है उसकी सार्थकता हेतु जन साधारण इस अपनावेगा और इसके अधिनायिक प्रचार हेतु सहयोग देगा । अस्तु ।

२०-१० ६७

सरस्वती विहार

भीलवाड़ा (राज०)

फनहमिह लोड़ा

(सवालक)

भी यती-द्र साहित्य सदन

# जीवन मन्त्र

ॐ



लेखक

श्रीमद्विचय यतीन्द्रसूरि शिष्य  
मुनि जयन्तविजय "मधुकर"



# आत्म-भावना

## परम मैत्री

प्रगटे हृदयना आगणे मुक्त शक्ति शत दीपावली ।  
तमसावरणन भेन्नारी त्रिव्य ज्योतिष्कारली ।  
महु दुःखियोना दुःख कापु ण्हवी मुक्त भावना ।  
मुक्त थइ सहु सौग्य पामें एजरहे नित कामना ॥

## समापना

मनापणे जो कोइ मुक्कने, शांति तहने आपवा ।  
मत्तोण पूर्वक हें महुं त आमगुण त्रिफसारवा ।  
जे धैर धृति राखरो हें, तेदधी करी मित्रता ।  
नही दिल दुभासु सोइतु राखी हृदय पवित्रता ॥

## सर्वमय भार

नहा इष्ट मरु सोइने छ निन्दगी प्यागी सदा ।  
आपी शकु नही निदगी तो लइ शकु नहा हूं कदा ।  
यम एत करणु सर्वदा, मम रर त्रिप वहतु रह ।  
करु प्राण हूं महु जीरतु, सहु मृत्यु यी जीवन लहे ॥



## परहित चिन्ता

बूढ़ न थाओ कोईनु थाओ सहनु हित मदा ।  
जगम अने स्थावर महुण शान्ति पामो मर्बदा ।  
तन, मन अने केशप्रनी वीणा सदा म्कारती ।  
दुःख भागे स्नेह जागु, एज इन्द्रे भारती ॥

## परम वात्सल्य

आ लोक ने परलोकमा पण भारता एवी रहे ।  
जैन शासन कल्पतरु सेवी सेवी सहु शिव सुख लहे ।  
निज शक्ति थी रागी कहु हूँ सर्वने शासन प्रति ।  
'राजेन्द्र' शक्ति 'जयन्त' अपा म्करना मारी अति ॥

## जीवन की कला

बिना ब्रेक का गाड़ी का कोई मूल्य नहीं, बिना पाटो का रेलगाड़ी कभी चल नहीं सकती तथा पागल हाथी बिना बंधन के बश में नहीं रह सकता। इसी प्रकार ज्ञानिया के कथनानुसार बिना नियम का जीवन कभी कलापूर्ण जीवन नहीं बन सकता। ऐसे जीवन में यदि कला टूटने जाओगे तो तुम्हारे पीछे अनेक आपत्तियाँ लड़ी हो जाएंगी अतः इनमें बन्धों और नियम पूरक रहो।

ॐ

## जीवन की गाड़ी

नियम एवं संयम के बिना यदि व्यावहारिक कार्यों में सफलता नहीं मिल सकती तो फिर अनियमितता से जीवन कैसे सफल हो सकता है। वा पाटों के बिना कभी रेलगाड़ी चल नहीं सकती। इसी प्रकार ज्ञान एवं क्रिया के बिना जीवन की गाड़ी कदापि नहीं चल सकती। नियम पूर्वक रहे बिना जीवन की गाड़ी कभी उन्नति नहीं कर सकती अतः मन्मार्ग गामी का शरण जीर अनुशरण आवश्यक है।

## जीवन अमृत या जहर

जीवन में अमृत एवं जहर दोनों हैं। परन्तु इसका न्याय तो जीवन व्यतीत करने की कला पर निर्भर है। जो स्वयं स्नेह मय, मिलनसार वृत्ति के द्वारा प्रेम पूरक जीवन व्यतीत करता है उसी का जीवन अमृत व समान है तथा जो द्वेष दृष्टि एवं तिरस्कार करता रहता है तो उसका स्वयं का जीवन जहर बन जाता है। शक्तियों का पहना है अमृत को जहर मत बनाओ। अमृत का उपयोग करते हुए अमृता के मार्ग को ग्रहण करो तो तुम्हारा जीवन भी धन्य बन जावेगा।

और

रहेगा अमर जीवन ग्रन्थ

मन के मभी पात्र में बुद्धि की त्याही भरते हुए भाव लेखनी के द्वारा तुम्हारे जीवन मंत्र को सम्पूर्ण लिख डालो। तुम्हारा यह कार्य अनोखा रहेगा। शरीर नहीं रहेगा किन्तु प्रन्थ रह जावेगा, निन्दा नहीं रहोगे किन्तु तुम्हारी निन्दा दिली रह जावेगी। जैसा तुम लिख दोग वैसा तुम्हारा परिचय हो जावेगा। यदि तुम्हारा सन्माग रहेगा तो तुम आदरणीय एवं प्रशसनीय बनोगे। सब बुद्ध चला जावेगा किन्तु तुम्हारा जीवन का मंत्र अमर बना रहेगा।

## जीवन का माधुर्य

समा जीवन का मुख्य गुण है। निम्में सम्पूर्ण परिश्रम भरी हुई है। समा गुण माधुर्य को श्रेष्ठ बना है जिससे माधुर्य साधना को मिद्ध कर सकता है। समा गुण पतितों को भी परित्र बना देता है जिसमें अग्नि दूर हो जाती है। समापना कर्म क कचर को जलाती है। इसमें कर्मा को हमेशा के लिए जाना पड़ता है। समापना ही जीवन का माधुर्य है मिठास है जो अमृत जैसा मधुर है। समापना सबसे उत्तम सजीवनी है क्योंकि नि इसमें मनामिक रोगों का शीघ्र नाश होता है। समापना अधिकार में दिव्य ज्योति के समान है। जिसके सहारे पथिक अपने रास्ते पर चल सकता है।

५५

## जीवन विकाम

चित्तना गुड़ और घी डालो उतना ही माल ( मिष्ठान ) भीठा ओर पुष्ट बनता है। इसमें चित्तनी कमी रहेगी माल उतना ही कम स्वादिष्ट होगा। तुम्हारा यह जीवन माल मिष्ठान्न से कम नहीं है। जरा विचार तो करो। तुम्हारा स्वयं के जीवन में जीतना शुद्ध समय का घी एवं मधुर वचनों का गुड़ चित्तना अधिक मात्रा में होगा उतना ही तुम्हारा जीवन सर प्रकाश से विकसित होगा तथा प्रत्येक को आनन्द देने वाला होगा।

## ज्ञान दीप

ज्ञान का दीपक जिसके हाथ में होता है वह कहीं भी गीते नहीं टा सकता । जिसे तैरने का ज्ञान होता है वह डूब नहीं सकता । किन्तु समय पर डूबते हुए को तारने की शक्ति रखता है । किन्तु यह ज्ञान सम्यक् ज्ञान, आत्म-ज्ञान जाना चाहिए । भौतिक ज्ञान नहीं । वर्तमान रिक्त है, भ्रष्ट प्रवृत्त है और विपत्तियाँ के घादल महरा रहे हैं । इसका एक मात्र कारण यही है कि आत्म-ज्ञान का अभाव है और भौतिक ज्ञान का प्रभाव है ।

ॐ

## लक्ष और सिद्धि

विधर न्यो उधर यह दुनियाँ भले पासे की भागीदार बनती है । दोना डाली पर बैठना इसे याद है । इसीलिए मनुष्य को अपना विशुद्ध लक्ष बना लेना नितांत आवश्यक है । फिर किसी भी परिस्थिति में वह धमल नहीं हो सकता किन्तु शत प्रह है कि व्यक्ति को अपने आप को धैर्यवान बनाना चाहिए सम्भीरता के साथ निरचल एवं निरखल प्रवृत्ति धारण करना पडती है । सहन शील बनते हुए कदाव्य पथ पर आगे चलना पडता है इसी में प्रत्येक कार्य की सिद्धि समाई हुई है ।

### क्षमा धारक का महत्व

क्षमा देना और मागना ये दोनों ही वीर पुरुष के लक्षण हैं अनुचित करने वाला मोटा नदी बन सकता। अनुचित को उचित करने वाला ही मोटा समझा जाता है। उचित करने के लिए क्षमा का शस्त्र धारण करना चाहिए। दुष्टों का समूह मले ही क्या न हा किन्तु उनका बच में यदि एक क्षमा धारक सचन चला जाय तो उन सब के घेर को बिखर सरता है।



### द्रष्टा कोण

ज्ञान की आराधना की इच्छा करने वालों को ज्ञानिया क चरणा में नम्रता पूर्वक भुक्त जाना चाहिए। जहाँ तत्र ज्ञानिया का बहुमान करना नहीं आयेगा वहाँ तत्र ज्ञान का बहुमान होना असम्भव है तथा परिणाम में ज्ञान धर्णीय कर्मों का क्षय भी कठिन है। ज्ञान के प्रकाश में स्वयं को हूँ हना मरल नहीं है। दिखने वाले पदार्थों को देखने मात्र से दृष्टा नहीं कहा जा सकता। किन्तु पदार्थ के सच्चे स्वरूप को उसी रूप में ज्ञान से सन्धी दृष्टि आती है। सम्यक् ज्ञान होने पर ही ज्ञाता को दर्शन शुद्धि प्राप्त होती है तथा उसे ही दृष्टा कहा जा सकता है।

## मर्यादा में रहो

मनुष्य को इतना भी कायर नहीं बनना चाहिए जिससे वह स्वयं की साधारण क्रियाओं को न निभा सके। इतना वाचाल भी नहीं होना चाहिए जिससे लोग उसे वाचाल कहकर उसकी उपेक्षा करें। इतना घुप भी नहीं रहना चाहिए जिससे लोग उसे मूर्ख समझ कर उसे मूर्खों की श्रेणी में गिटा दें। इतना उदार भी नहीं होना चाहिए जिससे लोग उसकी इज्जत लेने पर वतारु हो जायें।



## धर्म का फल

धर्म की आराधना करना मरल है उतना उसे पचाना मुश्किल है। जिस घर में धर्म का राज्य होता है, धर्म का बोल-बाला हो उस घर में अशान्ति नहीं दिखाई देती। जिसको धर्म रुच गया है उसे कौन कभी सता नहीं सकता। उसके चेहरें पर हमेशा प्रसन्नता छाई रहती है। उसकी बाणी में मधुरता भरी रहती है उसके कार्यों में कल्याण का सागर ही लहरें मारता रहता है। मनुष्य को स्वयं विचार करना चाहिए कि मैं किस स्थिति में हूँ और मुझे कौन सी स्थिति प्राप्त करना चाहिए।

## जीवन मंत्र

सिद्धि किम रीति से मिल सकती है

दूसर काम करत हैं तो तुम्हे पसंद नहीं तो फिर स्वयं ही अपना काम कर लेना चाहिए । नू कायर, कमचोर और आलसा बन जाता है इसी का तो यह फल है कि तब मन के अनुकूल अथवा स्वभाव के अनुकूल कोई काम नहीं होता । स्वयं के अनुकूल काम तभी होता है जब व्यक्ति स्वयं प्रमाद के चक्कर से दूर हो जाता है । अनुभव के आधार पर ही जाना गया है कि स्वयं ही स्वयं का धानक है । सोकर रोने बैठता है और दुनियाँ उपहास करती है । इसीलिए ज्ञानी कहते हैं कि भाइ स्वावलम्बी बन । दूसरों पर भरोसा रखना यह नायरता का प्रतीक है ।

५१

व्यापहार शुद्धि

तुम परोक्ष में भी हर प्रकार से विन्दुद्ध रहने का प्रयत्न करो नहीं तो यह दुनियाँ कुछ भी कहने में नहीं चूकती, अच्छे से अच्छे को भी खराब कहने वाली यह दुनियाँ है तो तुम्हें खराब कहते कौन डरेगा ? इसीलिए स्वयं एवं दूसरों का कल्याण हो ऐसा प्रत्यक्ष एवं परोक्ष व्यापहार रखो । जिससे कि तुम्हें दबना न पड़े और न कोई तुम्हें कुछ कह सक ।



## हठाग्रह बुरी बला

हठाग्रह परान होता है। यही तुम्हें स्वयं के पथ में विचलित कर लेता है। यही हठाग्रह दुःसाग्रह एव कदाग्रह का राक्षसी रूप धारण कर लेता है। वहाँ तु अपने निज के स्वरूप को भूल जाता है तथा तेरे विचारा में विवृति जा जाती है। अन हठाग्रह से मुँह मोड़कर सदाग्रह सत्याग्रह को ही अपना ताकि आचार एव विचार दोनों में शुद्धि बड़े और तेरा पथ प्रशस्त बना रहे।



## कहने के पहले विचारो

तुम्हें किसी को कुछ कहने के पहले विचार करना चाहिये कि वह मेरी बात का क्या मतलब निकालेगा। तुम्हें उस समय बड़ा शर्म आयेगी जब मैं किसी प्रकार का आचरण तो करता नहीं किंतु दूसरों को सुधारने की बात करता हूँ। मैं किसी प्रकार की साधारण तपस्या तो कर नहीं सकता और दूसरों को तपस्या करने का उपदेश देता हूँ। जब मैं दूसरों को 'व्रत' पञ्चगाण' कराता हूँ और स्वयं नहीं करता तब तुम्हें लगना क बशीभूत होकर मुँह धिपाना पड़ता है।

## दर्शन कैमा होना चाहिए

आँख होते हुए भी अन्ध की तरह किस प्रकार चल रहे हो ? यदि आँख का उपयोग मत्स्य-दर्शन हुआ है तो ही अच्छा है अन्यथा व्यर्थ है । असत्य दर्शन उन्माद में ले जाता है तथा सत्य-दर्शन मार्ग का पथिक बनाता है । जैसी दृष्टि वैसी यदि सृष्टि मिले तो समझना चाहिए कि दृष्टि में विकार है । यदि सृष्टि के अनुसार दृष्टि बना ली जाये तो समझना चाहिए कि अभी अज्ञान है । किन्तु जो वस्तु जिस रूप में है और उसी रूप में दिखाई दे तो समझना चाहिए यदा ज्ञान का लक्षण है ।



## शक्ति-मंत्रय

जिसका मन शरीर है वह शरीर, जिसका वचन पर कानू है वह मंत्री और जिसका शरीर स्वस्थ है और अपने वश में है उसे सेनाध्यक्ष समझा जाय । जो नाराज हो जाय वह शरीर नहीं, जो उट-पटाग बोले वह मंत्री नहीं और जो स्वयं क शरीर को वश में नही कर सकता वह सेनाध्यक्ष नहीं हो सकता । विराग क पथ पर आगे बढ़ने वाले पुन्यमान को मन-वचन और काया को अच्छी स्थिति में रखना नितांत आवश्यक है तभी वह शरीर, मंत्री तथा सेनाध्यक्ष इन तीनों की शक्ति अपने अन्दर जान कर निभा सकता है ।

## धर्म का स्वभाव

धर्म कदापि व्यक्ति का पतन नहीं करता, धर्म का स्वभाव है कि गिरत हुए को बचाता। जिमने धर्म को अपनाया है धर्म उस अपनाता है। धर्म से दूर जाने का अर्थ है दुःसों को आमन्त्रण देना। भूत काल, भविष्यत काल और वर्तमान काल इन तीनों में वह स्वयं के स्वरूप में ही रहता है। स्वयं के स्वभाव से कभी विचलित नहीं होता। जब मनुष्य विचलित हो जाता है तभी वह स्वयं की प्रकृति बदलता है और परिणाम में वह दुःसों के गड्ढे में जा गिरता है। धर्म स्वयं की प्रकृति को कभी नहीं बदलता।



## महत्ता का शिखर

यह दृष्टिया का ढांचा क्या क्या नहीं करता है ? इसी में सभी शक्तियाँ समाई हुई हैं। मनुष्य की नस नस में लोश है, बल है और पुरुषार्थ की प्रवृत्ता है। जहाँ तक वह अपने कार्य को रूप नहीं देता वहाँ तक कुद्व नहीं हो सकता और जब वह अपने साथ कुद्व करने लगता है तभी वह महत्ता के शिखर पर चढ़ जाता है।

## धर्म की गुरुण

जीवन में ज्ञान, मार्ग का काम करता है । दर्शन दीशाल रूप जैसा है और ऊपर की द्रव के समान है । इसी प्रकार तीनों के मिलने क परचान् अहिमा समय और तप को धारण करने वाला आत्मा महान बनती है । श्रेष्ठ पहलाती है । उममें लोह चुम्बक त्रैमी आम्पण शक्ति उत्पन्न हा जाती है । परिणाम में स्वयं के दवता दौड़ने चले आते हैं । और इस पत्रिआत्मा की सेवा करना अपना अहोभाग्य समझने हैं । इसीलिए जीवन में धर्म को धारण करना और उसकी शरण लेना यही जीवन की परमोच्छष्ट साधना है ।

३२

सुप्र कौन

इस प्रकार बात बात में क्या मुँह चढा लेने हो, बात पूछो समझो और समझाओ । किन्तु इस कमनोरी को मुँह चढ़ाकर दूनी मठ करो । मुँह चढ़ाने वाला मुट्ठा व्यक्ति सुन होते हुए भी अज्ञानी की श्रेणी में चला जाता है । खूब प्रसन्नचित्त रहना चाहिए तथा सभी बात कहना चाहिए और जानना चाहिए । अन्यथा तुम्हारी जिन्दगी व्यर्थ है यह समझना चाहिए ।

## जीवन मंत्र

मैत्री भाव से रहो

यदि तुम्हारा सब के प्रति स्नेह है तो मभी तुम्हें चाहेंगे। यदि तुम पर कीड़ गारान है तो, उसके कहने के पूर्व अपन स्वयं क मन का निरीक्षण करना चाहिए। तुम माफ हो तो तुम्हारे साथ कौन द्वेष कर सकता है ? यदि तुम योग्य हो तो कौन तुम्हारा विरोध कर सकता है ? यदि कोई विरोध करे तो तुम स्वयं को सम्हाल लो। जहाँ तक यदि कोई विरोध करता रहता है उसको वहाँ तक चैन नहा मिलता। चैन से सोने और चेा से रहने के लिए योग्यता और मैत्री भाव की वृद्धि करना चाहिए।

५५

धर्यों के नजदीक मत जाओ

दूमरा के काले धर्या के नजदीक अपने मन, वचन और काया को मत जाने दो। काले के नजदीक का स्पर्श स्वयं को सला बनाता है। यदि उसे मन से स्पर्श किया जाय तो मन अपवित्र बन जाता है और यदि वचन से स्पर्श करते हैं तो वाणी दूषित बनती है। इस गुण की महत्ता निम ओर दिवाइ दे उसे प्रहण करो और फिर देगा तुम्हारे दाग सफेद हुए क्या ? आवश्यक धूल जावेंगे।

## जीवन मंत्र

### स्वयं की शक्ति का ज्ञान रखो

जिसे स्वयं की शक्ति का ज्ञान नहीं उसका जीवन त्रय है। जिसकी अपनी शक्ति का भान नहीं उसका सारा जीवन दुःखों में घालता है। स्वयं की योग्यता जो सम्पन्न बना है उसी का परम शक्ति मिलती है। योग्यता के अभाव में अगर कुछ कर लिया, लिखा-दिया हो तो वह नतीजे में क्लेश बंधक होगा और पीड़े से दाता और प्राप्त दोनों को परचाताप करना पड़ता है। शक्ति का ज्ञान न होने पर यदि शक्ति के साथ भिडन्त हो जाय तो निश्चय ही अज्ञाति बढ़ती है। इसीलिए हृदय में दृष्टि गढ़ कर अपनी योग्यता पहिचानो फिर दग भरों।



### दृष्टि बदल कर देखो

तुम अपनी आंखों को चश्में उतार कर फिर देखो कि यह दैनियों और पाण्डिया का व्यवहार तुम्हारे लिए प्रेरणा का कारण बन रहा है। चश्में की रंग-विरंगी तहक भङ्ग में यदि तुमने वहीं रास्ता छोड़ कर अनुचित व्यवहार अथवा मानसिक चिन्तन कर लेते हो तो यह दुःख कारक नहीं बल्कि दुरा दायक भी बन जाता है।

## राज मार्ग पर चलो

रास्ता सीधी सड़क का लेना बाह्य निससे फिमी को पूछने की आवश्यकता न पड़े अन्यथा यदि भटक गये तो गड़्हे में गिरता पड़ता है। भटकने के परात् लक्षित स्थान पर पहुँचना बहुत गुरिलाल है। अधूर शाही को समझाना फठिन है। या तो पूरा विद्वान अत्रा जो मय के लिए लड़ता है सत्य को समझने ही अपनी सरल प्रशुति यों से उमे अगीमार कर लेता है तथा उसके अनुमार अपना समझ जीवन बना लेता है। अथवा मूर्ख अच्छा जो कुछ भी नहीं जानता जो बात उस समझा दी जावे उसी को अंगीकार कर वह अपना जीवन सुधार लेता है। किंतु अध ज्ञानी है जो न कच्चा है न पक्का नैस कच्चा पक्का अन्न जिस प्रकार रोग उत्पन्न करता है इसी प्रकार अध ज्ञानी व्यक्ति फिमी की बात नहीं मानता। अपनी टपली के अपना राग अलापता रहता है। वह सुनने वाला और धोखने वाला के लिए अनिष्ट कर होता है।

## मव भीरु की योग्यता

मोम ताप लगने हा पिघल जाता है। पत्थर को चाहे कितना गर्म करो किन्तु वह जरा भी पिघलता नहीं। इसी प्रकार मोम जैसे हृदय वाले को पीतराग की बाणी का सदा करन ही अमर हो जाना है और वह विनीत बन जाता है। किन्तु पत्थर जैसे कठोर हृदय वाले को सुनान माला मल ही बडा व सु दर ववरुन्व कला में निपुण व्यक्ति ही क्या न मिल जाय तो भी उसका हृदय द्रवित नहीं हो सकता। माम जैसे हृदय वाला भव—भीरु होता है और पत्थर जस हृदय वाला भवामिनदी होता है



## कष्ट ही कर्मोटी

कष्ट में ही मनुष्य की सफलता एवं असफलता का अज्ञान निकाला जा सकता है। कष्ट में ही मरलता और धरुता का ज्ञान हाता है। कष्ट आने उम समय मदान छोड़ कर भागना नहीं चाहिए। किन्तु उसको शम एवं उसाह से दूर करने का उपाय करना चाहिए। मनुष्य एक है और उसके पीछे कष्ट अनेक हैं। इतना होते हुए भी प्रत्येक कष्ट को दूर करने जाओ और बिना कष्ट का जीवन मिताओ



## खींच तान मत करो

बात को अधिक क्यों-बढ़ाने का । अधिक खींचन में तो टूट जाती है और टूटने के परिणाम छोड़ो तो गांठ तो पड़ ही जाती है । यह हर बात खींचती है । इस कारण से मानो जहाँ जहाँ बातों की खींच तान हुई वहाँ भयंकर परिणाम सामने आये है जो कहे नहीं जा सकते हैं । बुद्धिमान और समझदार छोटे शब्दों में अपना काम बना लेता है । मूर्ख जिदगी भर रोता ही रहता है । उचित खींचना लाभदायी है तथा अनुचित खींचने में क्लेश बढ़ता है ।

५५

## तप का नेत्र

चन्दन जितना अधिक घिसता है सुगंध उतनी अधिक फैलती है । साठे को जितना अधिक मद्धर किया जाता है उतना ही अधिक रस निकलता है और सोने को जितना अधिक तपाया जाता है उतना अधिक तप प्रकाश घाला बनता है । इसी प्रकार मत्पुरुषों पर जितने अधिक कष्ट आते हैं उतने ही वे शक्ति शाली और प्रतिभावान बनते हैं ।

## जीवन मंत्र

स्थायी क्या है !

मुझे नाम नहीं काम चाहिए । नाम का तो नाश हो जाता है और काम स्थायी रहते हैं । नाम से तो प्रेरणा मिलती है उससे कितनी ही अधिक प्रेरण काम से मिलती है । नाम का मोह नीचे गिराता है और काम का मोह उन्नति-शील बनाता है । सभी पर्यवर्तीओं से प्रेरणा लेता रह और वे मेरा पथ प्रगस्त करते रहें । यही प्रेम मयी भावना जीवन का माधुर्य है ।



क्या चाहिए

मनुष्य तुम्हें सोना प्रिय है अथवा (मोना) आगम करना । यदि तुम्हें सोना (स्वर्ण) प्रिय है तो फिर मोन ही नहीं मिल-सकता है और यदि साना (शयन) प्रिय है तो स्वर्ण (सोना) मिलना कठिन है । ईमिल्लिण सोने का प्रेम मुरा है तुम्हें साना वायक है जिसने शयन का कितनी मात्र में त्यागा है उतनी मात्रा में उसने धन प्राप्त किया है जिसने शयन में मोह रक्खा है उसने उतना ही खो दिया है । अतः तुम स्वयं अपने मन में पूछो कि तुम्हें सोना है अथवा पाना है !

## फल की कीमत

एक एक दिन नहीं किन्तु एक एक क्षण का कार्य अपने जीवन को गढ़ता है। ऐसे असह्य क्षणों से अपने चरित्र का निर्माण होता है। इतना ही नहीं इतिहास लिखा जाता है साहित्य का स्रजन होता है और अनोखी फला के माध्यम से अनेकों को प्रेरणा मिलती है। यह अपने जीवन के रात दिन अपने सभी को प्रतिश्रम जागृत एवं निर्भिक बनाने का अभूत-पूर्व लाभ देत हैं। इसीलिए प्रतिक्षण मन उचन और काया को उन्नत रखो और परम पद प्राप्त करने के हेतु आगे बढो।

ॐ

## शैतान कौन

मनुष्य सभी प्राणियों में बड़ा है। किन्तु मनुष्य यदि एक दूसरे को मारने लगे, खाने लगे तो उस इन्सा नही कहा जा सकता। उसे हैवान अथवा शैतान ही कहा जायेगा। उसको मानव शब्द में सम्बोधित करना तो मनुष्यता का घोर अपमान है

## हठ से बचो

राज हठ बुरी है क्योंकि यदि राजा प्रसन्न हो जाय तो राज हठ और नाराज हो जाय तो खराबी कर देता है। राज हठ भी बुरी है जिसे बार बार साफ करो तो भी वह चिपकती रहती है। योगी—हठ में अहंभाव रहता है। इसीलिए योग-हठ भी ऐसी ही है। निम्न समय जो होने पा है उसे कोई टाल नहीं सकता है। बाल-हठ भी अच्छी नहीं। मिर के बाल भी ऐसे ही हैं साफ करो तो भी पुन तैयार हो जाने हैं। स्त्री-हठ को तो कोई पहुँच नहीं सकता इसी प्रकार वरुणा हठ भी अमाध्य हो जाती है। अतः इन हठों से बचने का उपाय करना चाहिये।

ॐ

## एक उत्तम

बुद्धिमान और समझदार एक ही अच्छा जो लालच को समझदार बना सकता है। तथा निर्माण कर सकता है नव चैतन्य का शान-नाद धना कर कुम्भकर्णी निद्रा में सोने वालों को जगा सकता है। पुस्तकें पढ़ने मात्र से कोई समझदार नहीं बन सकता किन्तु उसके अनुसार जो जीवन को ढाल लेता है वही इस श्रेणी में स्थान पा सकता है।

## याद क्या रहना है

तुम रहने का ही गुम्क या नही रहता, मैं रहता हूँ यह तुम्हारा वाक्यना मूल है। तुम्हें यदि कोई शब्द याद आता है तो क्या तुम उस महीना याद नही लही रखने का ? फिर जिस भाषा पर कहते हो कि मही निस्पृधि बढ़ती जा रही है। यह फहो कि हम राग क रागा हैं। हमें पसंद है इमीलिप यह याने अधिक याद रहती है। किन्तु याद रक्या कि यद् दुग्गी घनने का रास्ता है इस भूल जाओ और चीतराग (विराग) का याद रकसो।



## पद से दूर रहो

पद लेने में क्या है ? बिना पदवी के ही काम करो ना। वास्तव में बिना पदवी के जो काम हो सकता है वह काम पद पर जाने क पश्चात् नही हो सकता। पद लेने से जवाबदारी बढ़ती है। बिना पद के भी कार्य का निपटना है। पद से सच्चा अवरय मिलती है परन्तु पद से दूर रह कर ही पद की शोभा को बढ़ाना चाहिए। पद प्राप्ति क पीछे अपनी शक्ति का अवल्यय नही करना चाहिए।

## मधुर मीत और हित का बोलो

बाण जैसे तीक्ष्ण शब्द वच्यारण करना अच्छा नहीं। यह शब्द निकलने ही आपात करते हैं। यदि बोलना याद है तो ही बोलना चाहिए परन्तु यह मीठा, मित्रतापेदा करने वाला और हित कर होना चाहिए। क्षानी मौन रह कर स्वयं के काम इशारे मात्र से निकाल लेते हैं। मुख ज़ोर ज़ोर से चिल्लाता है फिर भी यह जो काम करना चाहता है उसमें उसे सफलता नहीं मिलती।

५५

## यहाँ पोल नहा चल सकती

अनक कामों में पोल चलती है उन छुपाओ तो छुपाइ जा सकती है। परन्तु तपस्या और त्याग में जरा भी उसे स्थान नहीं मिल सकता। पैदल चलना, बिना आहार पानी के रहना और ब्राह्म व आभ्यातर तप में स्थिर रहना यह वास्तव में कठिन है, जो इस पथ पर निर्मल भाव से चलता है उसके चरणों में हमेशा मधुर मुग्धा रहता है। त्याग के चल पर काया को, तप के चल पर मन को और पैदल विहार से स्वास्थ्य पर अशुभा रक्षित जा सकता है।

## गर्भ से दूर रहो

मैं बढ़ा हूँ, मैं पढ़ा लिया हूँ, मैं सब कुछ कर सकता हूँ। यह बात मैं तभी तर मान सकता हूँ जहाँ सब मुझमें कोई बड़ा विद्वान ७ मित्र है। विगिष्ठ विद्वान से सम्पर्क न हो और मुझसे अधिक महत्वपूर्ण कार्य करने वाला ७ मिला हो। जब उसके साथ सम्पर्क हो जाता है तभी जान पड़ता है कि अपने मुँह मियाँ मिट्ट घाने की प्रकृति पर भारी हु ग होता है दद होता है। अच्छा हो यदि मैं इन प्रकृतिया से दूर रहूँ।

ॐ

## प्रमाद से बचो

आहार और निद्रा इन दोना को घटाना या बढ़ाना यह बात व्यक्ति क हाथ में होती है जा यदि चाहे तो बढ़ा भी सकता है और चाहे तो घटा भी सकता है। इमना परस्पर सम्बंध है। आहार शरीर में आलस्य बढ़ाना है और परिणाम में नोद आती है। यही से प्रमाद का श्री गणेश शुरू होता है। अतः प्रमाद से बचने के लिए उन युक्त दोना को विचारपूर्वक धम करने की आदत डालो।

## जीवन मंत्र

जो दता है वही ले सकता है

यदि तुम्हें कुछ चाहिए तो पहले देना सीखा ।  
जो दे सकता है वही ले सकता है और केवल  
इच्छा रखने वाला कुछ भी नहीं पा सकता एक  
हाथ से जो देना सीखता है दूसरे हाथ में वह  
लेना भी सीखता है । पानी को दान करने वाला  
कुआ कभी खाली नहीं जाता और इच्छा किया हुआ  
तो मड़ जाता है । इसी प्रकार दिया हुआ तो आ  
जाता है और रखा हुआ भूल जाते हैं । यह ज्ञान  
मानव जाति को आज तीर्थंकर भगवान् आदिनाथ  
ने स्वयं देकर सिखाया ।

५१

गुण ग्राहक बनो

मैं मय कुछ जानता हूँ यह अभिमान मत करो ।  
बिना दूसरों के अशुभ देवता के लिए नहीं पढ़ी जाती  
किन्तु अपनी कमचोरी को मिटाने के लिए पढ़ी  
जाती है । दूसरा की गलती देखने में यदि समय खराब  
करोगे तो स्वयं ही ज्ञान धन बिगड़ जावेगा । और  
कभी वह हमें अंधेरे में भी भटक सकता है अतः इस  
दुष्टि से दूर रह कर गुण के ग्राहक बनो ।



## प्रेयो मार्ग और श्रेयो मार्ग

प्रेरक से प्रेरण प्राप्त मिलने के पर्याप्त स्वयं को श्रेष्ठ मार्ग महण कर लेना चाहिये। वहाँ प्रेम और श्रेय मार्ग का अनुभव हो जाता है यहाँ आत्मा स्वयं प्रगति की ओर बढ़ जाती है। इय मेय और उपादय को समझने के लिए ही प्रेय और श्रेय दोनों आवश्यक हैं। प्रेय को समझने के पर्याप्त श्रेय का समझना सरल है।



## अहं नहीं तो संसार नहीं

जहाँ तक तेरी अन्तरीमा चढ़ा जा जा ले कि तेरा मार्ग श्रेष्ठ है वहाँ तक अहं भाव को छोड़ कर श्रेष्ठ मार्ग की ओर प्रवृत्ति कर। इसक मिला जान के पर्याप्त अहं भाव का नाश निश्चय नहीं रहता है। जो चढ़ न रहे तो संसार भ्रमण अत्यन्त हो जाय और नाम शेष रह जाय। जहाँ तक अन्तर में अहं भाव रहता है वहाँ तक समझना चाहिये अपन भटप रहे हैं, भूल कर रहे हैं। भूले हुआ जो उचित मार्ग पर लगाने वाले हैं परम कृपालु गुरुदेव। इसी कारण मैं रह कर अन्तरात्म

## ईश्वर कहां है

मनुष्य स्वयं ईश्वर नहीं है किन्तु ईश्वर के प्रकाश से वह प्रयुक्त नहीं है। यह बात अक्षर सा मूल्य है। जो मनुष्य जागृत हो जाता है और स्वयं की जात का ज्ञान प्राप्त कर लेता है वह निःसंदेह भगवान के स्वरूप को प्राप्त कर सकता है। अगर वह पुरुषार्थ करे तो कोई सगाय नहीं है कि वह इंसान न बन सके जो मनुष्य कर्माव्य को पहिचान कर कफन बाध कर निकल पड़ता है तो उसकी सफलता में कोई दखल नहीं दे सकता है। वह निरचय प्रयुक्त नियमाल पढ़िन कर ही आता है।

१२

## आज्ञा के महत्व को समझो

आज्ञा के अनुसार करत नहीं हो, नियम के अनुसार चलते नहीं हो, योग्यता के अनुसार रहते नहीं हो और देश काल और मात्र के अनुसार बोलने नहीं हो। फिर क्यों दलील करते हो कि हमारे लिए सब प्रतिकूल है। ठीक रहो, आज्ञा के महत्त्व को समझो, आज्ञा पालन करने की क्षमता को रखो और योग्यता के अनुसार व्यवहार रखो फिर देखो अनुकूलता तुम्हारे चरण चूमती है तुम्हें दू दती दू दती आ पहुँचेगी।

## स्वस्थ और स्वन्द

जिसके घर में कचरा है उसके जीवन में कचरा है और जिसके जीवन में कचरा है उसके समाज में कचरा है और जिस समाज में कचरा है उसका त्रिपय अध पाया होता है । पर में प्रकाश होता है तो जीवन में भी प्रकाश होता है, और यह कल्याण मार्ग की प्राप्ति हो जाता है । पर को स्वन्द स्वयं पर जीवन मात्र और स्वस्थ बनाया सीखना चाहिए यह आत्म गुणा की प्राप्ति और उन्नति का प्रतीक है ।

॥

## श्रेयस्कृती मर्यादा

मनुष्य पैस लेंगे स्वयं की आवश्यकताओं को बढ़ाता जाता है पैस पैस उसके सामने अनेक कठिनाइयाँ मुह फाड़ कर खड़ी हो जाती है । उसकी इच्छा उसे स्वादा पर खती है । उसकी अनास्तमिक आवश्यकताएँ उसे दुर्गी बनाती हैं । जितनी अमयादा होती है उतनी आवश्यकता होती है और जितना मर्यादा में रहो उतना ही आनन्द । सरदार में मर्यादा में रहने वाला व्यक्ति ही स्वयं का हित साधन कर सकता है । प्रेरणा मार्ग का अधिक ध्यान होता है । मर्यादा-पूर्वक विवेक विमाल होता है यह स्वाधी और हृद होता है ।

## मिद्धि कहाँ मिलती है

जहाँ फूट वहाँ टूट, जहाँ मप वहाँ सब, जहाँ मिलन वहाँ आनन्द, जहाँ भेद वहाँ खेद ? जहाँ एर राग वहाँ विनय, जहाँ अपनी ढपली अपना राग वहाँ हमेशा हार पराजय । एर की आराज त्ही जैसी सप की आराज प्रभाव करी ।

जहाँ मन वचन और ज्ञाया की एकता होती है वही मिद्धि निकट आती है और जो इसमें भिन्नता हो जाय तो सिद्धि रूक जाती है । द्रव्य और भाव दोर्ना एक जिसरा होता है उसकी ही जीत होती है हमेंगा ससार के रंगमंच पर ।

५२

## अनियमितता ही बीमारी है

नियम में बहुत शक्ति है और अनियमितता में शक्ति का अपव्यय होता है । वतमान में सभी विमारियों का कारण प्रायः अनियमितता ही दिखती है । जरा सी बीमारी भी पमद नहीं तो अनियमितता तो बीमारी की जननी है । उसे क्यों प्यार करते हो ? यह अभी तक समझ में नहीं आता है ।

अमूर्त कभी बनाई ना मरनी है

क्या कोई आत्मा को प्रत्यक्ष बना सकता हो जो अमूर्त रूप हो। कोई व्यक्ति यह कहना है कि तुम भी न हो किन्तु प्रत्यक्ष बनाओ। तुम जमे जाँ पड़ों तक और पड़ों पड़े हो यह बाहर गिराव कर बताओ तो कोई कोई मूल रूप बता सकता है ? जो बता सके हो समझ लेना चाहिए कि इसी प्रकार आत्मा है।

३२

मानव धर्म

मानव धर्म का जिन क्षण नहीं जाका संसार में जीना व्यर्थ है। फिर यह जिन्ही सम्प्रदाय का क्या न हो धर्म की यही आशा है कि मानव की रक्षा करो। जिस मनुष्य को मनुष्य के प्रति प्रेम न हो उस मनुष्य को भिक्कार है। जिन धर्म में मनुष्य के प्रति आदर भाव नहीं बताया गया है वह धर्म सुदा है वह बयल धर्म का फलेवर है। जिस दिल में मानवता का स्थान नहीं वह दिल पत्थर है। उस दिल को दया पात्र समझना चाहिए।

## अड़चनो से हताश न होओ

धर्म का फल तत्काल नहा मिल सकता है पीरे पीरे ही मिलता है। आम हो चोते ही वह तत्काल फल नहीं दे सकता, इसी प्रकार धर्म की आराधना जो अद्वितीय और अचिंत्य फल प्रद है वह किस प्रकार फल सनती है? मनुष्य उत्साह में और जोश में धर्म करने बैठ जाता है किन्तु इच्छा अपूर्ण रह जाती है तब वह हताश होकर घेदाश हो जाता है। हारना नहीं चाहिए, किन्तु बीच में आने वाली बाधाओं को दूर करते हुए स्वयं की प्रवृत्ति में लग जाना चाहिए।

॥

## वैसे धन की पूजा करना चाहिए

आज सभी धन की पूजा में रत हैं ऐसी लालसा करते हैं कि हमें धन मिल जाय और जो है वह बढ़ता रहे। सच पूछो तो सच्चे धन की पूजा करना चाहिए उसकी वृद्धि करने के प्रयाग की प्रतिज्ञा करनी चाहिए जिससे मनुष्य में मानवी गुणा का विकास हो सके। जीवन स्तर ऊँचा सठ और सभी ओर स्नेह वृत्ति में वृद्धि हो।

## प्रमाद का दुष्परिणाम

प्रमाद शैतान का घर है, प्रमाद से मनुष्य को उन्माद सूझता है—प्रमाद से आदमी पागल बन जाता है। प्रमाद जहर है—निसने इस पीया है उसका सर्वनाश हो गया है। प्रमाद बह (भ्रम) जैसा है। निसे लग जाता है उसकी समाप्ति हो जाती है। प्रमाद चतर और प्रेत जैसा है—निसके दिल और मगज में घुसता है उसकी सुब सुब खतम कर देता है। प्रमाद विरेक हानता का परिचायक है, जिसके कारण व्यक्ति के विकास पर ताला पड़ जाता है —प्रमाद त्रिना ब्रेक की गाड़ी जैसा है।



## सुनारो या छोडो

जो अपनी बात नहीं मानता और अनुशासन हीनता का बर्ताव करता है वह अपना किस प्रकार बन सकता है ? उसे को अपना मानना और उस प्रोत्साहन देना साप को दूध पिलाने क समान है। उसे को या तो सुधार देना चाहिए अन्यथा उसे हमेशा के लिए छोड़ देना चाहिए। अगर नहीं हो सकता है तो स्वयं के नाम को कलत्रित करता है और वही दुःख का कारण बनता है।

## किमती वैसी पहिचान

जो हारकर मान जाता है वह यहादुर नहीं-डॉक्टर के कहने से जो एम्बार खाता है वह तपस्वी नहीं । जो स्वयं की कला को पसे से बेच देता है वह कलाकार नहीं । गूंगा मीन रहता है इतने मात्र से वह मूर्ख नहीं है । समझने से जो समझ लेता है और सत्य का इटापह छोड़ देता है वह यहादुर कहलाता है । छानियाँ के वचन पर विश्वास करके जो एक समय भोजन करता है उसे तपस्वी कहने हैं भाव वृद्धि के हेतु ही जो प्रदर्शन करता है वही सच्चा कलाकार है और समय पर जो बोलता है वही सच्चा समझदार है ।



## प्रत्येक क्षण का उपयोग करो

मले ही आये हो किन्तु इसकी खुशी तुमको मले ही हो मुझे नहीं है आने क परचात् जाने का भूत लगा हुआ है इसलिए मुझे प्रसन्नता नहीं है । मेरे जीवन का एक क्षण पूरा हो गया जिसका क्षण समाप्त हो गया हमनी जिन्दगी का अन्त तो आयेगा ही । मुझे इसका भय है कि जीवन फही निरर्थक न चला जाये-प्रत्येक समय इस बात का पूरा विचार रखना चाहिए ।



## आदत न टालो

सुनो तो सही आदत को क्या टालन हो ? चलत को छेड़ना चाहिए उमरो मताया तो यह तुम्हे पढ़ाई देगा यह निश्चय जानो । यह तुम्हें उसकी याय में भीड़ देगा-इसीलिए आदत को शुरू में ही नहीं टालना चाहिए-जो आदत को टाल देता है आदत उसे पढ़ाईती है आदत ही व्यसन का रूप धारण कर लेती है ।



## त्याग के ग्रहण में विवेक

ससार में आदान आरेय और प्रदान प्रयेय का कार्य अनादि काल से चला आ रहा है । देने योग्य देने में आता है और लेने योग्य लेना चाहिए । अत्यात मद्य साधारण तौर पर इसका अर्थ यह हुआ कि त्याग करो और प्रहण करो । जो अनुचित है और अनागरणीय है उमे तो छोड़ो और जो प्रहण करने योग्य है उसे प्रहण करो इसमें क्या छोड़ ना ओर क्या पकड़ना इसके लिए गुरुजना से सम्पर्क साधकर प्रेरणा लेना चाहिए ।

## वीरन मंत्र

### मला मनुष्य कीन

जाल विद्याना सरल है किंतु उसको समेटने का कार्य बहुत मुश्किल है—जाल विद्याने वाला स्वयं जाल में फँस जाता है इसलिए उससे दूर रहना ही हितकारी है। इतना होते हुए भी यदि कोई भूयं बनता है तो उससे सतर्क रहना चाहिए। अर्थात् अपनी स्थिति का दूसरे लोग गलत अर्थ लगा कर उसका अनुचित लाभ घठाने हैं। अतः स्वार्थ जय लाभ को छोड़ कर जो परमाय में अपनी प्रवृत्ति रखता है उसे ही मला आदमी कहा जा सकता है।

५५

### निष्काम प्रेम

प्रेम प्राणी मात्र के आर्पण का ऋतु है। मने ही यह किसी जाति का क्यों न हो। निष्काम प्रेम सबको सब जगह विनय दिलाता है आत्मा का प्रेम निरन्दल होता है—जहाँ तक वह विरुद्ध नहीं होता वहाँ तक वह सन्चे माँग का प्रदर्शन करता रहता है विरुद्ध होने के परवान् उसकी हालत बिगड़ जाती है। निष्काम प्रेमी कहीं भी जायँ तो वह अपने व्यवहार से सभी को अपना बना लेता है।

## एक साथे सब सघ

बहायत है कि "एक को साधने से सब सघ जाने हैं" और सब को साधने घंठते हैं तो सब चला जाता है" यह निश्चित है कि व्यक्ति को हर समय एक वस्तु ही बनाना चाहिए। सब ही वह अपने कार्य को सुन्दर तरीके से पूर्ण कर सकता है जो अनेक स्थानों पर अनेक कामों में नाम कमाने लग जाता है-जीवन की धुरी को बहन करने के लिए जो एक लक्ष्य बना पर चढ़ता है वह अजरय वृत्तीय होता है।

५१

## त्याग किसका

तुम त्यागी बने हो कैसे तुम्हारे अन्दर तो काम, क्रोध, लोभ और मान तो ठोस ठोस कर भरा है-आहार में तुम किसी बात का विचार नहीं करते, जो नहीं मिलता है केवल बमी का त्याग करने हो। यह स्थिति तो तिर्यक के पशु-पक्षिया जैसी है। कटुपि धृति का त्याग नहीं करते हो, तो निश्चय समझना कि तुम्हारा यह त्याग तुमको ही ले लूँगा।

## सज्जनों का सहारा लो

तुम किमी के आश्रित हो ? आश्रय इंसान बना देता है । शराब आश्रय बदनाम कर देता है । तुम भूल रहे हो और और भूल कर भोले बन रहे हो-ऐसा भोला बन अज्ञानता का सूचक है अनानता नशा लाती है । नगा सज्जनता से दूर कर देता है-तुम्हें वह नीच बना देगा-इसीलिए मेरा कहना यह है कि सज्जन का सहारा पकड़ो ।

॥

कचरा हटाओ ।

अधिक समय में वस्तु का नाश हो जाता है अकड़ो घातें शब्दों में रह जाती है-थोड़े दिन तक उन्हें यदि न सभाली जाये तो उन पर भी कचरा पड़ जाता है । लोहे पर कीट पड़ जाता है । परिणाम में स्वयं के स्वरूप में विकृति आ जाती है । कुगल लोहार के प्रयत्न से वह स्वयं का वास्तविक रूप धारण कर लेता है । शराब इमी प्रकार सैद्धान्तिक बातों में होता है और समर्थ पुण्य पुण्य वसुधो भवति शिव करके जन साधारण पर महान उपहार करते हैं ।

त्याग तलवार की धार है ।

या तो त्याग माग को पकड़ना नहीं चाहिए और यदि पकड़ लिया तो पकड़ कर रखना चाहिए त्याग का अर्थ कैवल्य वैश्व का त्याग नहीं बरिज मागी बातों में त्याग होना चाहिए । अशुभ चिंतन का त्याग, भूठे वचन का त्याग और अप्रशस्त आचरण का त्याग, त्याग का माग यजूर क वृक्ष जैसा है-जो फोड़ उसके ऊपर चढ़ता है तो परम आनंद प्राप्त करता है और गिर जाय तो हड्डियाँ टूट जाती है या मर जाता है त्याग माग को अंगीकार करना एक घात है और उसे यथा स्थित निभाना और उसके ऊपर दृढ़ धन कर चलना दूसरो घात है-इसीलिध पहिले विचार कर लो फिर उस पर पर रक्तो तलवार की धार पर पर रखने की शक्ति और तरीका आना चाहिए ।

११

निदक साथी

मुझे ऐसा साथी नहीं चाहिए जो मेरे पीछे, घुराई का प्रचार करता रहता है-मैं तो हूँ ही घुरा किन्तु बार-बार मेरे घुर गीत गाकर उसकी पवित्र, जवान दूषित बनी रहे यह मुझे नहीं रुचता है ।

## जैसा अन्न वैसा व्यवहार

“जैसा राय धान वैसी लेवे शान” यह कहावत सच है। तेजो वर्धक तामसी पदार्थ खाने से मनुष्य में आक्रोश क्रोध और तामस प्रकृति की वृद्धि होती है उसमें वह स्वयं को भूल जाता है। सात्विक पदार्थ के सेवन से मरलता, मरसता और सात्विक भाव का उदय होता है, जिससे व्यक्ति का व्यक्तित्व मरक चठता है। राजसी पदार्थ खाने से अहं भाव बढ़ता है जिससे व्यक्ति की स्वयं की प्रगति में बाधाएँ उत्पन्न होती हैं इसलिए जैसा अपने को बनाना है वैसा भोजन करो।



## निर्मम और समम

विद्वान को अहंकार नहीं सताता है और जिसमें अहंकार है वह विद्वान नहीं, ज्ञानी निर्मम होता है अज्ञानी समम होता है निमम पुण्य पुरुषों की श्रेणी में पहुँचता है और समम अवनति की लाइन में खड़ा रहता है जैसे वन घैसे निमम बनने की प्रवृत्ति ही लाभदायक है।

## कर्तव्य का विचार करो

जहाँ दूसरे सब जाग उठे हैं और चल दिये है वहाँ कहो तो सही कि अभी तक तुम्हारी नींद नहीं उड़ी ? घताओ तो सही पेम्मी खोटी स्पधा करके ही जीवन जिता-ओगे या अपनी स्थिति पर विचार करोगे ? बोलो तो सही, कुछ तो कहो ? कौन से तुम करने के काम कर रहे हो या नहीं कर रहे हो या नहीं करने योग्य कर रहे हो ? कभी तो तुम अपने आप को नेर्रो कि अपन किस हालत में हैं, यह प्रश्न सामने है जिस हर -यक्ति जानता है फिर भी परिणाम में शून्य है इसका कारण कुछ इना चाहिए इसके बिना हम बहुत पीछे हर जावगे ।

५५

## गरीब और अमीर

आने वाला कुछ भी लेकर नहीं जाता है परंतु हाँ कुछ देकर ही जाता है गरीब स्वयं की गरीबी को ओर देकरता है और अमीर अपनी अमीरी को बचाये रखने में भ्रमगूठ है-गरीब गरीबी देकर जाता है और अमीर अमीरी का मान छोड़ कर जाता है परिणाम में दोनों एक जैसे बन जाते हैं ।

## जीवन मन्त्र

### अलिप्त वृत्ति

मनुष्य के जीवन की चङ्ग में कमल के समान होना चाहिए जिससे विपत्ति आने पर भी कभी मानसिक, वाचिक अथवा कायिक क्लेश उत्पन्न न हो पाय। जितना आसक्त रहोगे उतनी ही आपत्तियाँ बढ़ती जायेगी और सम्पत्ति समाप्त हो जायेगी। सपत्ति की प्राप्ति और विपत्ति से दूर रहने के लिए कमल के समान रहना आवश्यक है परन्तु भले ही कीचड़ में हो किन्तु सिर तो पानी के ऊपर ही अलिप्त जैसा रहता है। इसी प्रकार सामारिक समस्याओं में घिर जाने के परिणाम भी उनसे पृथक् रहना हितकारी है और श्रेयस्कर है। जिसने जितनी अलिप्त वृत्ति रखी उसने उतना मंगल पद प्राप्त किया है।

॥

### सनिष्ठा और सद्भाव

जहाँ तक सम्पूर्ण निष्ठा और सद्भावना लागू नहीं होती वहाँ तक कष्टमय पथ से गिरने में देर नहीं लगती है। इसलिए प्रत्येक काम की सफलता में सनिष्ठा और सद्भावना नितान्त आवश्यक है।



## श्रेयो मार्ग और प्रेयो मार्ग

मन मे मान और चित्त से चिन्तन करत हुए स्पष्ट ज्ञान पडता है कि कौन मा भं य मार्ग है और कौन सा प्रेय मार्ग है ? उसका ज्ञान परिशीलन हो जाता है कि किस प्रकार की प्रवृत्ति को अपनाना चाहिए ? मन का धन है श्रेयस्कर पथ का परिज्ञान । चित्त का धन है श्रेयो मार्ग का परिशीलन और शरीर की श्रेष्ठ प्रवृत्ति है अनुशीलन जिसका मन यद्वर वृत्ति को छोड़कर मन को ओर प्रवृत्त होता है निमरा चित्त चञ्चल वृत्ति को छोड़कर चिन्तन की तरफ लग जाता है और निमका शरीर परिपूर्ण रूप से लोक सम्मन प्रवृत्ति में प्रवृत्त रहता है यही मनुष्य इस ससार में उत्तम समग्र जाता है ।

५४

समझदार कौन

स्यावर जीव वनपरिच्छ वाय जो तम जीवों को ढंढी छाँया नेकर शान्ति दे सक्ते हैं तो क्या तू चलता फिरता समझदार मनुष्य किसी को सहारा नहीं दे सक्ता यह कितना विचारणीय है ?

## जीवन मन्त्र

### मूल की मड़ान को दूर करो

शुभ मिश्रित घर में कौन रह सकता है ? दूरे हुए मकान को कौन पसंद करता है ? कोई भी पसन्द नहीं करता। इसी प्रकार शिथिलता से क्षत मिश्रित अपने को कौन चाह सकता है ? अपनी अडग कौन माने कोई नहीं अपन पत्तों पर कितना ही रग लगावे किन्तु मूल में जो मड़ान लग रही है-आग लग रही है है उसको तुरन्त सभाल कर व्यवस्थित करना चाहिए। अन्यथा अपनी आज जैसी स्थिति कल जैसे रह सकती है ? यह एक विचारणीय प्रश्न है ?



### जाति भाइयों के माय सहयोग रखो

कौन जैसा स्वयं जाति भाइया को बुलाकर और सबके बीच में बैठकर सक्रम भाग बना कर फिर ग्याना पसंद करता है तो मनुष्य जैसे मुझ इस गुण को अपनाये, तथा इसमें दूर रहता है यह कितना विचित्र है ? स्वयं के जाति भाइया के प्रति यदि दूर सदभार और सहयोग का भाव मनुष्य में है तो वह स्वयं उच्च स्तर से निम्न स्तर पर आ जाता है यहाँ मानयता की शृयु हो जाती है।

## मुठ्ठी और फैलाये हुए हाथ

मनुष्य आता है मुठ्ठी प द करक जो कोई इसको खोलता है वह फिर उसे प द कर देता है मानो कोई महामूल्य वस्त्र को बस्तु लेकर आया हो । यह मंच है कि वह उसी मुठ्ठी में पुण्य और पाप छुपा कर लाया है । परन्तु जो लाया है उसका उपयोग यहाँ पर करने और आगे की तैयारी करना भूल जाये तो फिर गाली हाथ लम्बे करक जाना पड़ता है । ऐसा माहूम पड़ता है कि किसी के पास स याचना करते हुए जा रहा है ।

पर

## बनाना और बिगाड़ना

बनाना जितना कठिन है बिगाड़ना उतना ही सरल है । जीवन बनाने के लिए है बिगाड़ने के लिए नहीं । निमाण के लिए है । मिट्टी में मिलाने के लिए नहीं । दुःख है कि आज का मनुष्य बनाना भूल गया है और बिगाड़ना सीख गया है । इसलिये आपत्तियाँ का शिकार बन गया है बनाने के लिए प्रयत्न करना चाहिए बिगाड़ने में तो कुछ नहीं लगता इस पग पर अभूत बहता रहे इसका

## जीवन मंत्र

### प्रकृति और व्यवहार

प्रकृति और पुण्य यह दोना एक दूसरे के सह-योगी हैं जहा तक इन गेना की ममतुला घगनर रहती है वहाँ तक मनुष्य इम सफ्ट में चाहे सो कर सकता है किन्तु जहाँ मनुष्य प्रकृति क प्रतिशूल हुआ कि तुरत ही यह माननी हाँचा खगव होते नेर नहीं लगती, प्रकृति के अनुकूल रहने का अर्थ है खय अपनी इच्छा के अनुसार लाभ उठावे । पिता की इच्छा के अनुसार यदि पुत्र नहीं करता है तो पिता पाध्य होकर उसे दूर करने की कोशिश करता है । इसी प्रकार यदि प्रकृति क प्रतिशूल रहे तो प्रकृति खय पुण्य से अपना सम्बन्ध तोड़ने देर नहीं करता है ।

३५

### मज्जन और दुर्जन

सज्जन इशारे में समझ जाता है और दुर्जन मार पीट करने के परचान् भी नहीं समझता है । इन्सान कम धोलता है और अधिक करता है । शैतान खत्र धोलता है और करता कम है । हेवान चिल्लाया करता है और खय की फतीती करता है शानी हृदय में विचार करता है और बिना बोले ही कर डालता है ।

## निवृत्ति मूलक प्रवृत्ति

मन, वचन और काया स यह मालूम हो चुका है कि मेरी अधिक प्रवृत्ति से ही मेरा नुकसान हो रहा है। प्रवृत्ति मार्ग स मैं परहित के सुन्दर कार्यों का विचार करता रहता हूँ परन्तु यह मुझे सिपक रही है वस अब सभी प्रवृत्तियों के ऊपर अंगुश रगगा पड़ेगा जिसमें निवृत्ति की गंध रहगी णसी प्रवृत्ति की ओर हो पैर गया लावेगा-निगुय पर ठिया है और हम कार्यरूप में परिमित करने का प्रयत्न भी प्रारम्भ कर दिया है। नैव गुरु और धर्म का बल मुझे अपने ध्येय में सफल बनाने के लिए अपूर्व गाय देगे।



## चंचलता और स्थिरता

जहाँ तक स्थिरता नहीं होती है वहाँ तक काय सम्पन्न होने में अवश्य विलम्ब हाता है। गती का के द्रीकरण न होने के कारण और अस्थिर दिमाग के कारण वसका मिश्र भिन्न धाराओं में बहाव होता है - मन की चंचल गति है उसको स्थिर करने अपने मार्ग पर आगे बढ़ो।

## जीवन मन्त्र

### उदारता को समझो

मैं उदारता का समर्थन करता हूँ-इसका अर्थ यह नहीं है कि कोई उड़ाऊ बन जावे मैं मृत्यु वादियों का समर्थन हूँ किन्तु स्वयं का निम्न लाभ हो और अन्या को हानि पहुँचे यह बात मुझे परमद नहीं बात करना मुझे अवश्य परमद है मैं काम को चाहता हूँ परन्तु वह काम अवश्य होना चाहिए-निम्न अनेकों को लाभ मिलना चाहिए। मैं अधिक पालना नहीं चाहता परन्तु इसमें किसी को यह नहीं समझना चाहिए कि मैं गूगा हूँ।



### बल और बल

जो कार्य बल सहो सफल है वह कार्य बल में कदापि नहीं हो सकता है। बलवान के स मुख्य बलवान को पराजित होना पड़ता है। बल शरीर का होता है, बल और बल क्रमशः बढ़ती जाती है। बलवान को भय रहता है वहाँ बलवान और बलवान को भय नहीं सता सकता शारीरिक बल में अह उत्पन्न होता है और धार्मिक बल में शांति प्राप्त हो सकती है।

## मौज मजा और परिणाम

नमस्त मसार शात चित्त से मौन मने में पूरा समय नष्ट कर रहा है। मौन मने के पाचाय यमराज की कौन के इमे कितने डडे पड़ेगें इसकी इसे खबर नहीं भनातर का भय रखे बिना चाहे जिस प्रकार से खय के सुग में लीन रहे तरन्तु फाल रात आख निकाल कर यह सब खेप रहा है। किसको किस समय अपने नरडे में भर लेगा और घडी क छुटे भाग में था या नहीं था कर ? तो इसको कोई फह सफता है मोई नहीं—अब में यदि कोई लूट ले तो उसका दुख होता है किन्तु पागृत अपस्था में हाथों हाथ खे जो डगता नहीं है तमे मनुष्य को धम मार्ग पर चलता जान कर कालराज खय उमसे कापने लगता है।

३१

## स्वतन्त्रता और स्वच्छन्दता

स्वतन्त्र रहो और खतत्र विचार धारा भले ही रखो किन्तु स्वच्छन्द न मनो-समार में स्वतन्त्रता की अपेक्षा स्वच्छन्दता बढ़ती जा रही है और इसी कारण जन साधारण उसकी गहराई में डूब रहा है

## पुराना और नया

सच में लकीर का फकीर बनना ठीक नहीं अयोग्य के है किन्तु तभी तब कि जब तक लकीर है—चीरा है—तेमा समझ में आ जाय नये जमाने के लोग पुराने जमाने लोग का आलोचना करते हैं और ये पुराने जमाने के लोग नये विचार वाला को ठीक नहीं मानते । यह क्यों हमारा विचार करो या तो आलोचना करने वाले उसे समझ नहीं कर अथवा ठीक नहीं मानने वालों ने हमको समझने की कोशिश नहीं की इसी कारण कोई ज्ञानविक्रम स्थिति नहीं पा सकता । पुराना सभी आलोचना के लिए नहीं है नया सभी अपनाने के लिए नहीं है । नये पुरान का समझ (ज्ञान, काल और भाव को देख कर ) समिश्रण ठीक होता है और वही आचरण सब प्रकार से समुचित का कारण बनना है ।

॥

## तुच्छता और गम्भीरता

जिसमें गम्भीरता है वह समुद्र के समान है और जिसमें तुच्छता है वह तालाब जैसा है, गम्भीर उच्च श्रेणी का अविनाशी होता है तथा तुच्छ अवनति की ओर जाता है ।



## जीवन मन्त्र

### श्व कल्याण

दणन के बिना मुक्ति नहीं ज्ञान बिना मुक्ति नहीं और चारित्र के बिना शक्ति नहीं। मर्म्यरु दर्शन, ज्ञान और चारित्र के त्रिवेणी सगम क रिता आत्म सिद्धि नहीं हो सकती-निसमें इन तीना का सगम हो गया वह आत्मा मच में श्वय का मच प्रसार मे कल्याण कर सकती है।

प्र

### स्वर्ग और सांकल

श्वयं रा कार्य श्वय को ही करना चाहिए तेरा काम दूसरा से कराने में तुम्हें शम आना चाहिए। प्रेम और भय के कारण कोई काम कर देता है परन्तु इससे कमज पतन ही होन वाला है और तरे जीवन में हमेशा शिथिलता ही बढ़ती जावेगी पुद्गल पराया है, दूसर का है, उसक आराम क लिए तू ऐसा परावलम्बी बन जाता है कि जो कुछ करने में आता है उसमें प्रमाद और श्वय का स्थान जमा होता है तो फिर जिदगी का आनंद पर क्या रहेगा। छोटे से छोटा साधारण काम भी तुम्हें श्वय को करना चाहिए तब ही तरे लिए यहा स्वर्गीय सुख मिल सकता है परावलम्बी हो जावेगा तो तू श्वय ही कपायों की चीन्डी के चक्कर में फँस जावेगा और कठिनाइयाँ की कठोर सांकल में बंध जावेगा।

## राग और विराग

राग का आनन्द भ्रमिक होता है दुःख कारक होता है। विराग का आनन्द स्थायी और सुख कारक होता है। राग में सभी खींचे हैं और विराग में सभी रिखाए रहते हैं-राग का रंग फीका और नेटाल होता है राग का रोग घन में बंधता है-विराग का रोगी मुक्ति की तरफ बढ़ता जाता है। राग का रोगी स्वायत्त मात्र ही माधता है जो अज्ञाति कारक है। विराग का रोगी परमार्थ और स्वार्थ दोनों को माधता है जो परमज्ञाति कारक है।



## आचार और अनाचार

किमी के साथ निरथक भगड़ा करना यह उत्कृष्ट अनाचार है। आचार की मर्यादा है प्रेम स्नेह और महार की भावना को जीवित रखना नमक विपरीत अनाचार है। आचार में, शैथिल्य में अतिचार मर्यादा का उल्लंघन अनाचार है। अतिचार रूपण है जो प्रायश्चित्त के साधुन से साक किये जा सकत हैं परन्तु अनाचार का प्रतिकल भोगना पहता है विचार पूर्वक जो किया जाय यह आचार आचरण। अविचार से करने में आवे वही अनाचार, अनार्याचरण।

## जीवन मन्त्र

### दृष्टि सैमी होना चाहिए

जो सब का सब मकता है वही नुद का बन मकता है और जो स्वयं का करता है वही सब का कर सकता है सब को जाने बिना तत्व को मान बिना, और दूसरा को परने बिना कोई जीव किसी समय भये में नहीं साथ रका, साथ नहीं सकता है, और साथ नहीं मकेगा। स्वयं को जानने के लिए सरल दृष्टि होना चाहिए, तत्व को जानने के लिए अनेकात दृष्टि होना चाहिए और दूसरों को परने के लिए अतिसवादी दृष्टि होना चाहिए।

३१

### स्वार्थी और परमार्थी

दोस्ती भीठी नपावदागी है—जिसने निभाता प्रत्येक का कर्तव्य है। स्वार्थी दोस्त सब को और दूसरों को दोना को ले डूबता है। परार्थ परायण व्यक्ति सब का भला करता है और दूसरों को हानि न पहुँचे इसका पूरा खयाल रखता है और नि स्वार्थी परार्थ परायण मित्र सब का खोकर भी दूसरों का हित चिन्तन करता है। जिसके हृदय में हित बसा है वह जगत में जीव मात्र का सब बन जाता है जो स्वार्थी होता है वह दानव है और जो परार्थी होता है वही मानव है।

## शिष्ट और अशिष्ट कार्य का फल

कार्य को सुधारण और विगाडना यह व्यक्ति क  
 स्वयं के ऊपर है उसके पास जहर भी है और अमृत  
 भी है। वह मरना चाहे तो जहर है और अमर होना  
 चाहे तो अमृत है उसके सुन्दर काय कलाप अमृत  
 बनते हैं और अशिष्ट काय कलाप धुरे बनते हैं।  
 इसलिए शिष्टाचरण, शिष्टवचन और शिष्ट चिंतन  
 मनन रखना चाहिए।

ॐ

## धमण तपोवन

हे माधु। तेरा जीवन सभी क लिए आरक्षण का  
 विषय है। इसलिए तू त्याग मय जीवन व्यतीत  
 करते हुए परम आदर्श स्थापित करता है तुम्हें भूख  
 सहन करने की शक्ति है। तुम्हें प्यास सहन करने  
 की शक्ति है। तू प्रत्येक प्रतिष्ठा समय को अनुकूल  
 बना सकता है। तू तपोधन है। तुम्हें तेर तप धम क  
 द्वारा तपोधन की स्थिति को स्थिर करना चाहिए। तुम्हें  
 श्रमण के शुभ सम्बोधन से घेला जाता है तु इमरा हर  
 समय विचार कर जिसमें तेरा प्रयास सफल बन जाये।

## जीवन मन्त्र

श्रमण तू कौन है

ह सागरे । तू क्षमा की मूर्ती है, दया का समुद्र है और शान्ति का भण्डार है । तेरे मन में क्षमा ही स्थान रखती है तर बरना में दयाङ्गता ही टपकनी रहनी चाहिए और तर माया मंदिर में शान्ति ही रह सकती है । तुममें गर्मी नहीं आना चाहिए, अशान्ति तुमको नहीं सतायें चाहिए, निद्रयता स्वप्न में तुम्हें नहीं दिखायें चाहिए ज्ञान का तू सागर है, ध्यान तू आकर है आराधना का तू यशस्वी माधक है, तू ही मयम का साक्षान् प्रमाण है, तुमको स्वयं का खाल रखना चाहिए, तर पैर कीचड़ में नहीं फसना चाहिए ।

ॐ

अभिमान बड़ा दोष है

मान यह मनुष्य का बड़े से बड़ा दोष है यह जहाँ तक हृदय में बसा हुआ है वहाँ तक मनुष्य भले ही बड़े पन में जाना जाता हो किन्तु ज्ञानी तो उस गोटो ही कहेंगे । क्योंकि इसकी हाजरी में दूसरे सब्गुण तथा देव गुरु और धर्म की भक्ति या आराधना फलती ही नहीं है ।

## न्यायी व्यवहार

शास्त्रकारों ने गृहस्थ का पहला गुण न्याय सम्पन्न ब्रह्मण्य कहा है। उसका पूरी तरह से पालन कहना यही गृहस्थाश्रम को सुगम बनाने का साधन है। अन्याय करने से अधम का भार उठता है समाज में अत्रिशांभ जमता है और व्यवहार में प्रतिष्ठा समाप्त हो जाती है। राज्य शासन के अनेकों प्रकार के आक्षेपों को सहन करना पड़ता है और जन्तु में प्रतिष्ठा सम्पन्न तन, धन जन और धल से परिवेष्टित व्यक्ति को चारों ओर से घातना सहन करना पड़ती है। जो स्वयं के मन प्राणी और शरीर का व्यापार न्यायी रह वही व्यक्ति सर्वगुण सम्पन्न बन जाता है।



## लोकोत्तर सम्बन्धी

अरिहन्त लोकोत्तर सम्बन्धी है। इससे सम्बन्ध स्थापित करने के लिए लौकिक सम्बन्धों की रागाधता का त्याग करना आवश्यक है। लौकिक से पीछे हटना पड़ता है क्योंकि जब कनेकगन बदलता है तब ही करट मिल सकता है।

## अभय और भय

अभय समार में धूमता रहता है और भय भाव में ही रमण करता है। आमत्र भय स्वभाव में ही निमग्न रहता है आत्मी ससार में भ्रमण करती है तृती भाव में रहती है और महावृत्ती स्वभाव में आसन्न रहती है। अधर्मी अभय, धम भय और आत्मधर्मी आमत्र भय परमात्मा के निकट रहने वाला भय माही परमा मा घन जाने वाला स्वभाव में रमण करता है।

॥॥

## ज्ञानी और समष्टि

ज्ञानियों की दृष्टि उदार होती है उनका व्यवहार शुद्ध होता है उनकी वाणी हित, मित और पथ्यकारी होती है। ज्ञानी न स्वयं के ज्ञान में समष्टी को एक सरीखा देखेगा है स्वार्थ के बजाय परमार्थ की दृष्टि का परम तेज प्रकाशित होता है और उसी प्रकाश में निजातदी बनने का श्रेय उसको प्राप्त होता है।

## जीवन मंत्र

### कटौल और आराधना

इन्द्रिया पर नियन्त्रण करने में आना है तब ही मन्चा स्मरण हो सकता है अन्यथा च्छेन्द्रिया का व्यापार पृथक् होता है और भावेन्द्रिय पृथक् मार्ग पर ही हुए दिखाती है । अतः सर्वप्रथम इनके उपर अकुण्ठ रचना परम आश्चर्य है । श्रोत्रेन्द्रिय का विषय सुनना है । अरिहत के वचना को एकाग्र होकर सुनने के लिए कान का अन्य तरफ से अरिहत की तरफ घुमाने में आने तो ही अरिहत की आराधना हो सकती है ।

५२

### अहम भाव का रोग

जो अपने आप को बड़ा दिखाने का लग करता है वह छोटे समय क परिचात ही खोटा दिखने लगता है । जो छोटे पन को रखते हुए सहन शील होता है तो प्रभुता स्वयं हृदय में ही नहीं बल्कि सारे विश्व में आजाती है । अहम भाव का रोग बहुत जल्दा जा रहा है यह उन्नति की निशानी नहीं है ।



## प्रायश्चित्त और पश्चात्ताप

प्रायश्चित्त और पश्चात्ताप इन दोनों शब्दों से यही ध्वनि निकलती है कि पश्चिमा से जिस प्रकार चित्त झुझ रह सकता है उस प्रकार रक्तों । उसकी पुनरावृत्ति मत होने दो । कार्य होने क पश्चात् यदि दुःखद दिखाई दे अथवा अनुचित लिये तो उसके लिये जो कुछ समुचित विधान है उसे आचरण में उतारो उसे ही प्रायश्चित्त कहा जाता है । स्वयं के अज्ञान के कारण जो कुछ हुआ है उसका पश्चात्ताप करते हुए प्रायश्चित्त करना चाहिए ।

ॐ

स्व कर्तव्य

पर कल्याण का कामी होना चाहिए परन्तु पर कर्तव्य के कामी कभी भी नहीं होना चाहिए । पर कर्तव्य का अस्तित्व नहीं होता है ऐसा नहीं । किन्तु दूसरों में कत्ता का आरोप करके स्वयं के कर्तव्य को गौण कर देना यह कभी भी इष्ट नहीं हो सकता । स्वयं में कर्तव्य को स्वीकार करने से शक्ति मुखि बना जा सकता है दूसरों के कर्तव्य स्थापने से प्रमाद दशा बढ़ती है ।

## तपस्चरण और औषधी

तपस्या करनी चाहिये-तपस्या एक एमी रामदाण औषधि है कि निकाचिन कर्मों के फल को समाप्त करके नीरोग दशा को प्राप्त करा सकती है। परन्तु इसके लिए पण्य बहुत रक्कना पड़ता है। गम औषधि खाओ तो ठही चाने इतनी ही ग्या सकत हो जिसक कारण दवा गर्मी न कर सक अन्यथा स्वाभ्य विगाड जाता है। इमी प्रकार तपस्या अन्यत गम औषधि है उसकी शक्ति के लिए समता भाव रूपी ठडक संघन करने में नही आवे तो यही बनया विगाड होती है। अनुभविया का कहना है कि गरम जल लन सम्य बुद्ध ठही वस्तु अग्र्य रकरा।



## महा-मानव

मनु विचार को प्राप्त करने के लिए परम श्रेष्ठ परमेष्ठिया का ध्यान रामदाण औषधि है। इसमें निमग्न मन लग जाता है उसको अशुभ कर्म या बुर विचार आत् में भी भय का अनुभव होता है। इतनी अभूति विशाल शक्ति का स्वामी महामानव का मूर्ति ही पूजा जाता है।

## परमेश्वि शरण

तैयारी करो मर्त्य स्थापन की ओर फिर आगे परमेश्वि के शरण में, आदर करो इसके चरणों को, इसका ध्यान धरो, और इसके गान गाओ, सभी सरल, सफल और सरस होगा परन्तु मधस पहिले भावना प्रबल होनी चाहिए । जो आज लेना हो तो आज तैयार है इन परमेश्वि भगवतो की शरण । मन को दृढ करो और इन्द्रिया पर अकुश रकरो यह सब करने क लिए पहिले अतधीर्य शक्ति को प्रकट करना आवश्यक है । उसक परचा सभी यन्त्रवत् होता रहता है ।

५॥

## अरिहत के उपासक

अरिहत हो जाना याने सारे विश्व में अपना पन देगना और स्वय में पूर विश्व का दर्शन करना इतना विराट रूप बने तब ही स्वय में तमयता आ सकती है धाना मत्र दृष्टि में अरिहत लोकव्यापी है अत अरिहत क उपासका को स्वय की बात को असीम बनाना चाहिए ।

## जीवन मन्त्र

### सच्चा साथी

अन्य जना का माय अविज में अविक गात्र क बहार तक रहता है किन्तु परमेष्ठिया का साथ हर स्थान क लिए हमेशा के लिए होता है जिसका माय हमेशा हमेशा रहता है वही मन्चा मन्वधी होता है और विपत्ति क माग से उचकर सम्पत्ति के मार्ग पर जाता है । आपत्तियाँ उससे दूर भागती है । परमेष्ठिया से जो दूर भागता है वह सक्टा क समीप जाता है । परमेष्ठिया की प्रती हमेशा के लिए और मदाहाल तक रहती है किन्तु भिती करना आना चाहिए ।

५०

### शान्ति का उपाय

मिले उसमे प्रमन्न न होवो और उसका खेद न हो परन्तु जगत्स्वभावा का ही मात्र चिन्तन करते रहना यही परम शान्ति का श्रेष्ठ उपाय है । जो जाता है वह अपना नहीं । अपना है वह जा नहा सकता जाने वाला मिले और जाने वाला जाये इसमें उदा पोह नहीं करना चाहिए । स्वय की स्थिति में चंचलता न हो यही साधक की साधना की सिद्धि का चोतक है ।

## चिन्ता और वातावरण

जैसा वातावरण निर्माद है वैसे चिन्ता चलन रहते हैं, किन्तु बदलन हुए चिन्ता में स्थिरता लाना यही जिन्गी की मन्ची मफलता है। मद्-चिन्ता को रिग मके अ य चिन्ता को बाहर निगल दो। इमी म रगभायिक वैचारिक स्थिरता में मेल, बैठ सकता ह। लिमत हो तद ही य काम हो सकता है छोकरा न खेल नहीं कि तुरन्त हो जाय। जो जीवन को उन्नत करना है ज म नै का यश लेना है तो इस रास को पड़े विना छुड़ी नहीं मिल सकती।

३॥

## परमेष्ठियो का सम्बन्ध

जो सब ही का उन सके उही परेष्ठियों की सन्ची उपामना कर सकता है। स्वयं क रगार्थ में रहने वाला कभी भी इन पूज्यरों ही आराधना नहीं कर सकता, मभी न बन सके तभी मन्ची मैत्री भावना का उन्प होता ह। मैत्री भावना के विना यह आत्मा परमेष्ठिना से सम्बन्ध स्थापित नहीं कर सकती है।

## जीवन मंत्र

### सगा कौन

क्या क्या कोई किसी के कठिन समय में सगा बन कर रहा है क्या ? जो नहीं हुआ तो फिर भगवान (शिव, गुरु) और धर्म के मार्ग क्या नहीं बन जाते हों ? स्व पर कल्याण के पवित्र पद पर क्या नहीं चलते हों ? किसी के जान से कोई दुःखी होता ही नहीं । जो होता हो वह कबल बाढरी दिखावा है । जन्म लिया और बाल्यकाल में ही मर गये होते तो कौन दुःखी होता और कौन चिन्ता करता ।

ॐ

### प्रकृति और विकृति

प्रकृति पानी जैसी होनी चाहिए जिस रंग में मिलाओ उस रंग में मिल जाय किन्तु स्वयं की स्थिति और स्वभाव को न छोड़े । कोई के साथ मगडा करने की प्रकृति सतान की होनी है, कोई को सताने की प्रकृति हैवान की होती है, सबको प्रसन्न रखने की प्रकृति इंसान की होती है, सभी का कल्याण करने की प्रकृति भगवान की होती है । जिसकी प्रकृति विकृत हो जाती है उसका जीवन विकृत बन जाता है विकृति से बचने के लिए प्रकृति को अच्छी रखना यही भयस्कर है ।

## गन्धालता या विद्रुता

मर कृद्र जानत हृण भी उम का प्रेमी, उमी में प्रसन्नता का अनुभव करता है। मानी कलत हैं कि यद उमकी जानशरी गही रिनु अज्ञानी यशा है—कैची कैची घाने करने का आधि हो गया है और उमी में अपनी विद्रुता का प्रग्ग करता है। शाची उई विद्रान नही घलिउ उमे थायान और बहुत घार करने राळा फडते हैं कैची दूका और कीके पकगान जैमी उमनी ग्यति होती है निमके अदर कृद्र नहा होता है निमके आचरण में अश भी नही होता।

५५

## सफलता या विफलता का आधार

महासागर में मोत लगाने वाला प्रयत्न कर तो रतन प्राप्त कर सकता है किन्तु बिना भाग्य वाले को कंजर भी हाथ नहीं लगत हैं। प्रत्येक मनुष्य को प्रयत्न, पुरुषार्थ और प्रकिया णसी करनी चाहिण कि निससे उसके हाथ में रतन आसके। सफलता और विफलता तथा भाग्य का निर्वाण यह सभी मनुष्य की प्रकिया पर निर्भर है, ज्ञानियों की गगति से उसे समकना चाहिण और उसके अनुसार चलना यही उमकी सफलता का चोतक है।

## जीवन मंत्र

### भय और निर्भय

मर की पहिचान होन हुए भी यदि परमेष्ठी भगवतों की पहिचान नहीं हुइ तो सभी पहिचान व्यर्थ है । चक्र में डालने वाली है एक न्यान में एक हा तलवार रह सकती है-दो कभी नहीं रह सकती- एक हृदय में एक का ही स्थान हो सकता है । वहाँ ससार और उसके पोषक तत्व और कहा परमेष्ठी और उसके गुणों की गरिमा जिसके हृदय में ससारी को स्थान होता है वहा भय वृद्धि और पीछे भी भय रहता है जहाँ परमेष्ठी को स्थान होता है वहाँ हमेशा भाव वृद्धि ओर से होती है, निर्भय दशा ।



### प्रवृत्ति और निवृत्ति का पथ

प्रवृत्ति मूलक निवृत्ति घातक है, निवृत्ति मूलक प्रवृत्ति उद्धारक है, निवृत्ति सुखद होती है, प्रवृत्ति मूलक प्रवृत्ति में ऊहम रहता है, निवृत्ति मूलक प्रवृत्ति में सोहम रहता है, सोहम की घात भावोत्पादक होती है भाव शान्ति प्रदायक होता है विचार इधर उधर ले जा सकते हैं ।



## घोड़ा और लगाम

मन स्वयं के स्वभाव के अनुसार बचल होता रहता है एक क्षण में यह आकाश और पाताल का माप कर सकता है । उत्तर दक्षिण और पूर परित्रम का किनारा दगने दीड़ता है यह भले ही जाय मितु इसे पीछा फिरना आना चाहिए । घोड़ा भले ही भागने की हिम्मत कर परंतु सवार योग्य और लगाम बंद पकड़ने वाला होना चाहिए । अपन मन की लगाम भी अपने हाथ में होना चाहिए । यह तमी हो सकता है जत्र परमेष्ठिओं को तत्र रूप से पहिचान कर उसक ही जन जाय । इतना होते ही सुपुत्र शक्तिया का ममुदाय मानमिक घुरे को भत्रश्म बदल सकता है ।

ॐ

## तब ही मन के मुक्के

अनेक निराधार जीव इस मसार में भ्रमण करते ही रहते हैं । इनके लिए एक मात्र आधार अरिहत ही है । इसक प्रति सन्निष्ठा जागे तब ही ससार का भ्रमण छूट सकता है । सन्चा पूश्य भाव जत्र हृदय में प्रकट होता है तब ही स्वदश की ओर आगधर के पैर पड़ने हैं ।

## जीवन मन्त्र

### ग्राम्य और नगरीय गान्ति

सुली हवा प्रकृति का सुन्दर दृश्य और आश्रयन की सपन भाङ्गी के बीच बट कर फिर समार में चरन वाली प्रत्येक चहल पहल का विचार करने हुए आ मा का आनन्द की अनुमूति होती है । जहाँ तो बड़ा ही आशय अगाति और धमाल भरा जीवन ओर उदा हरियाली से आच्छादिन शांतिमय जीवन का आनन्द । ग्राम्य जीवन सतोपप्रद होता है तथा नगरी और नगरीय जीवन अशांतिप्रद होता है । इसका अनुभव भूक भागा ही कर सकता है

❦

### भय को आमन्त्रण

एक मारक बीषधि दूसरी बीषधि से समाप्त हो जाती है एसी सभी वस्तुओं यदा पर विद्यमान है जहर जीवन का अंत कर सकता है किंतु अमृत जहर का भी अन्त कर सकता है अधकार हर एक को भटकाता है किंतु प्रकाश अधकार को हटा देता है । कर्म आत्मा को भटकाता है किंतु इन कर्मों को हटाने वाले प्ररमेष्ठी से थोड़ी भी अलग रहना भय को निमन्त्रण देता है ।

## जीवन मन्त्र

### पूर्ण और अर्ध

अव्यय का अजीण बहुत पुरा होता है अत्र का अजीर्ण तो दूर हो सकता है कि तु अव्यय का अजीण अभी भी दूर नहीं हो मरकट डवी कारण मनुष्य पथ भ्रष्ट बन जाता है। मनो का लक्षण स्वयं की भूल को दूटना तथा दुर्जन का लक्षण है दूसरा की भूल को दूटना। मनो का स्वभाव हस जना होता है और दुर्जन का स्वभाव कौवे जैसा हाता है- सत भर हुए घड़े क समान गम्भीर हाता है किन्तु दुर्जन अब भर हुए घड़े की तरह झलमता है और सहन नहीं कर सकता !



### विकार और विचार

परमेष्ठि की शरण में जाने के लिए मानसिक एकाग्रता और विकार का निराम जरूरी है। मानसिक चञ्चलता और विकारों की आनक सध बुद्धि बिगाड़ लेती है। जब विकार बढ़ते हैं तो विचार भी विह्वल हो जाते हैं और परिणाम में वाणी व्यवहार में भी विह्वलता आ जाती है। जिसके कारण स क्रिया हुआ जप, नमस्का आदि का श्यावत परिणाम नहीं मिलता।

## महयोगी और साधना

योग्य साथी के अभाव में अज्ञानि और कटु फल का अनुभव करना पड़ता है। फिर वह गृहस्थ हो अथवा साधु गृहस्थ का गृहस्थाश्रम नष्ट बन जाता है और साधु की मानुषा क्लेश नष्ट बन जाती है। गृहस्थ से कर उमे भुगतता है साधु उसे पूरा का सम्बन्ध मान कर हँस कर उसे सहन कर लेता है। तो भी साधु जीवन में योग्य साथी की सारना होना नितांत आवश्यक है जो स्वयं का और साथी की साधना का मन, ध्यान और काया की त्रिवेणी से शुद्ध रूप मरु ऐसे उपर्युक्त महयोगी के बिना साधु जीवन पृथक् से भी अधिक दुःख हो जाता है।

१३

## विचार और विनाम

विचारों पर विनाम निर्भर है। सदविचार विकास के परित्र पथ पर प्रयाण करवाने हैं और दुर्विचार विनाम और विनाम की भयकर कदराना में घुमेड़ देने हैं। विकास के मार्ग पर मन का अग्र रहा हुआ है और विनाम में भवावर की भयानकता ही दिमाई होती है।

## जीवन मन्त्र

### अरिहत और प्बदश

अरिहत पद कर आगे बढ़त हुए स्वदेश की ओर जाना चाहिए, स्वदेश के लोगों को स्वदेश जाने के हेतु ही स्वदेश गये हुए परमात्मा भगवतो ने हर एक प्रकार से परदेश में होने वाली कठिनाइया का चित्र खडा किया है। स्वदेश का नाम ही ऐसा है कि पथिक के हृदय में बस जाता है। परन्तु परदेश की डरना और स्वदेश भावना जागे तब ही अरिहत की आराधना शक्य है।

### इसमे तेरा क्या

ॐ

लोग तेरी बाह-बाह से जय जय कार करे इससे तुझे क्या ? दिन रात लाड़ी, गाड़ी और वाड़ी के पीछे खो खिख खिख इकट्ठा किया इसमे तेरा क्या ? बहुत बड़े बगले बाब और मसमल की शक्या पर मोये पर इसमे तेरा क्या ? मेरे में लगा रहा। सब का प्रेम मपादन किया तो भी इसमे तेरा क्या ? बड़े बड़े ममारोह में हरे आया, त्भर भाषण से दिये परन्तु इसमे तुझे क्या ?

इसी प्रकार

मनुष्य का जीवन यदि कोई पारसमणि से कम नहीं है अधिक मूल्य वाला है ऐसा समझना चाहिए। मणि तो यह एक भ्रम में ही इच्छित वस्तु बन सकती है किन्तु यह उत्तम जन्म तो, जन्म जन्म को सुधार नेता है। इतना ही नहीं किन्तु जो इसको सद्गुरु के समर्पण में समर्पण कर दिया जाय तो निश्चय ही यह मानस-भव महा मंगल कारी बनने के लिए नहीं लगती। जन्म में तो मरण चमक दाग होना चाहिए जन्म के आनन्द के यथाय मृत्यु का आनन्द विशेष होना चाहिए। जन्म के पश्चात् मृत्यु तो होती ही है किन्तु जो पुण्यार्थ पूर्वक आराधना हो तो तब मृत्यु के पश्चात् मरण रह ही नहीं सकता। पारस का संयोग होने के पश्चात् फिर लोहा लोहे के रूप में रहता ही नहीं। इसी प्रकार पारसमणि जैसा मार्ग मर्मश्रेष्ठ संयोग प्राप्त करने के पश्चात् जो इससे माध लिया जाय तो जीवन लोहे जैसा रह ही नहीं सकता है।

ॐ

## जीवन मन्त्र

### चेतजो

दूमरां क दुगुर्णा का चेप तुम्ह न लग चाये इसक  
लिण मतक रहना । दूमरां का बुदाइ का भोग तुम्हारी  
जीम न बने इमलिये होशियार रहना । जि दगी का भरोमा  
नहीं है इमलिये हो सके उतना अराधना के लिये हमेशा  
तैयार रहना । गाड़ी स्टेशन छोड़े नहीं उसके पहिले बैठना  
हो नो मतक हरना । मग और में नोनों मनुष्य को पदाइ  
ने वाले हैं ये पदाइ नो इमन पहिले चेतना । इन्द्रियों  
निथिल हो जाने क परवान् कुछ नहीं हो सकना है इस-  
लिये मन्त्र स्पस्थ रहत हुण कुछ कर लेना चाहिण इसके  
लिये मतक रहो । ऊची रसु मस्त भाव में मिल गयी है  
नना हो तो चेतना । महगा मनुष्य का भव मिला है  
सफल करना हो तो चेतना । जीव मात्र का पीने का  
इक है यह स्पण मूत्र भूला न चाय इमलिये चेतना । इषा  
और अभिमान मनुष्य क अपूष दुरमन है जीवित  
दुरमन एक भव म मारता है परन्तु यह दोगा भव-भव  
में मारने वाले हैं इसलिण इनमे तर रहो और चतन्य  
रहो ।

## जीवन मन्त्र

### तेरा घर

नू चंतन्यमय, मदा अजर अमर रहने वाला तेरा घर कहीं और कसा ? क्या ये ईंट और चूने क बंगले तेरे हैं ? क्या तुम्हें इन्हीं घरों में रहना है हमेशा नहीं नहीं चाहे जैसा हो तेरा घर मिट्टी का नहीं हो सकता । तर घर जाने के परचानू तू फिर आने का नहीं है । तेरा घर नहीं मिले वहाँ तर सभी घर दूसरों के दूसरे कहा तर समाल कर रखने के हैं मुसाफिर मुसाफिर खाने में कहीं तर रहता है ? जहाँ तर गाड़ी आन का समय न हो बटा तर अधिक नहीं । तर लिए भी समय निश्चित हो गया है फिर तुम्हें कोई घर घड़ी नहीं रहने देगा । मिट्टी मिट्टी को रखकर बुझ होती है । मिट्टी को रख कर अनंत ज्ञान दशन चारित्र्य का स्वामी ये आत्मा क्या नहीं हर्षित होती । 'न घर भर्णी पर माह' जिस प्रकार एक विद्यार्थी एक क परचात एक श्रेणी सफल करते हुए लक्ष साधता है उमी प्रकार त सदगुरुओं क शरण को स्वीकार कर और तेरे घर को प्राप्त करने के लिए पुनपाथ कर ।



## जीवन मात्र

### जागते रहो

आये हो तो एक दिन जाना पड़ेगा अचानक बुलाया आयेगा नींद में मत रहो किंतु जागते रहो कृत्रिम प्रेम रखते वाले गये प्रसंग पर पीछे फिर जायेंगे गयर नहीं हो इसलिये जागते रहना । बहुत झकझु कराने पर भी कोई कुट्ट नहीं लेजा समता इसलिये जागते रहो हमते रीत हुए एक दिन सब ही छोड़ना पड़ेगा इसलिए जागते रहना । लुटेरे कपाथ आकर तुम्हारे आत्म धन को न लूट जाये इसलिये जागते रहना । समार का मोहक घातागण तुम्हें तुम्हारे ध्येय में विचलित न कर दे इसलिए जागते रहना । अपूर्य शान्ति दायक धर्म की आराधना करने के लिये प्रमाद को छोड़कर जागते रहना । मानरता की रक्षा और दानरता को दफनाने के लिए जागते रहना । ससार की वामनामें तुम्हें गदर खड़ा में रोच न ले जाय इसलिये जागते रहना । सब जीवों के प्रति मित्रता मेरा ध्येय सब जीवों का करवाण हो यही मेरी भावना और सब जीव श्रेय के सुख यह मेरा मुद्रा लगते यह पवित्र वृत्ति न द्विप जाय इसलिये जागते रहना ।

क्षमापन

परचाताप क पहाड़ में स बहती है क्षमापना की पवित्र नदी । इस मरिता में स्नान करने वाला सभी पाप स लिप्त नष्ट हाता है । परचाताप की अग्नि में कम उधन को भरमी भूत करत हुए क्षमापना में आकठ हूषी हुई चन्दन पाग और मृगावतीनी केवल ज्ञान को प्राप्त कर गइ । क्षमापना न्न क लिए हृदय में विशालता और मानस में नम्रता होना चाहिए । इसके बिना उपनाम भाव नहीं आ सकता और सच्ची क्षमापना नहीं हो सकती । शासन में भाव रोग को हटाने के लिए क्षमापाना सर्वतोमुखी सरम और मफल रामराण औपधि है । क्षमा बही न्ता है जो शक्ती शाली हो ग्याता बही जो अनुचित काय के कारण किसी का हानी पहुँचा चुका हो । । क्षमापना में जीवन उदय की कृपा है निरव मैत्री का प्रारम्भ और जीवन विकास के शिखर की प्रथम सीढ़ी है । गमे और गमाये वे आरावक, इसस जो विपरित होता है उह विराधक ।

ॐ

## इससे तेरा क्या

लोग तेरी बाह-बाह से जय-जय कर करे इससे तुझे क्या ? दिन रात लाड़ी, गाड़ी और धाड़ी के पीछे लो दिये खूब इन्ट्टा किया इससे तेरा क्या ? बहुत बड़े बगले बाध और मलमल की शैया पर सोये पर इससे तेरा क्या ? मेरे में लगा रहा सच का प्रेम सपा दन किया तो भी इससे तेरा क्या ? थड़े थड़े ममारोह में हो आया लम्बे भाषण ने दिय परन्तु इससे तेरा क्या ? दुनिया में वृल कर फिरा और दूमरा को कुछ न सममा इससे नरा क्या ? जगन में तेरी आवाज लगे और तरे नाम को सुनत ही मेरुहों जाग जायें किन्तु इससे तुझे क्या ? वैभव विहास में लगा रहा, नीफरा और पारफरा का पार न रहा किन्तु इससे तुम क्या ? शरीर का शृ गार करन के लिए खूब साधन जुटाये अच्छे आभूषण और वस्त्रा म शृ गार किया किन्तु इससे तुझे क्या ? तू मात सागर का राजा या जाय और तेर नाम का डका धनने लगे इससे तुझे क्या ?

बड़ा गुण विनय

सभी गुणा में विनय गुण बड़ा है और सर्वश्रेष्ठ है । इसी से व्यक्ति का व्यक्तित्व मिलता है और जीवन चमक उठता है इसी से निष्ठता का प्रमाण पत्र मिलता है । विनय हाथ-पैर का नहीं हृदय का होना चाहिए । शरीर में उसके अग्रिम नम जाय इससे कुछ नही होता है हृदय नमना चाहिए । हृदय एक घड़े जैसा है घड़े को भरन के लिए जैसे नमना पड़ना है उसी प्रकार हृदय के घड़े को नमाये विना मद्गुण में जल को वह प्राप्त नहीं कर सकता है । गुण विद्वान जीवन निर्गुण अर्थात् भवगुणा का दुग्ध मारना जीवन है । फूल में रही हुई सुगंध सबको आकर्षित करती है उसी प्रकार हृदय के फूल में मदापराण और मद्ब्यवहार का सुगंध हर एक को आकर्षित करती है । जो नमता है वह सबको अच्छा लगता है । विनय होता है तब ही नमन होता है नमन हो तब ही मनन हो सकता है और मनन करे तब ही जीवन में अमृत प्राप्त कर सकता है । परिणाम में सभी का प्राप्त करने का मूल एक ही विनय है अर्थात् विनय गुण बड़ा है ।

## तरी गिनती क्या

छ गड के चक्रवर्ती और जिमरी सत्रा में लासा  
 वेवता रहते ये उ भी यमराज नहीं छोड़ मना तो  
 फिर तेरी गिनती क्या ? अनेक प्रकार की शक्तियाँ थी  
 जिनके पास रात्रण को भी काल के जवडे में जाना पड़ा  
 तो फिर तेरी गिनती क्या ? सोने के पहाड खडे करने  
 वाले नद राचा को भी यमराज ले गया तो फिर तेरी  
 गिनती क्या ? धम तीर्थ की स्थापना करने वाले अनन्त-  
 ज्ञानी तीर्थर भगवता को भी काल ने नहीं छोड़ा  
 तो फिर तेरी गिनती क्या ? महलों में मौज मारने वाले  
 घडी के छट्टे भाग में थे या न थे तो फिर तेरी गिनती  
 क्या ? जिसके पास में घोडा की सेना थी और अब  
 जो का धन था वे भी काल के मपाटे में आ गये तो  
 फिर तेरी गिनती क्या ? बड़े बड़े माधाताओं को भी  
 जिना वारंट फ जाना पड़ा तो फिर तेरी गिनती क्या ?  
 जिमके एक घरके से धरती कापने लगती है ऐसे भी  
 एक दिन उठकर चले गये तो फिर तेरी गिनती क्या ?  
 मित्र दर जैसे विनेता को भी एक दिन मृत्यु क मामने  
 जाना पड़ा तो फिर तेरी गिनती क्या ?



## जीवन मन्त्र

### पयुर्पण आये

माया क लिए भाव और ज्ञान पिपासुआ क लिए ज्ञान का दान करने क लिए आये । दानिरगरियां को योग्य क्षेत्र में दान देने का मदेश लेकर आये । मंत्री भाव घटाने और आराम कल्याण क लिए मुन्दर शिक्षण देने क लिए आये । घटाने और बडी से बडी शक्ति बनाने के लिये आये । अराधना का मार्ग बताने और जिनेन्द्र वाणी को बरसाने के लिए आये । जड़ता को जीतने और ब्रह्मता का दूर करने के हेतु आये ।

५४

क्या लाये ?

क्रोध की अग्नि को बुझाने के लिए क्षमा का जल लाये । मान क पहाड को तोड़ने क लिए नम्रता का धस लहर आये । माया के जाल को काटन क लिए सरल धृति की कतरनी लाये । लोक के राक्षस को समाप्त करने के लिए सतोष का शस्त्र लाये । कपार्यों के विष को नष्ट करने क लिए परम शांति का अमृत स भरा हुआ घडा लाए ।

और तुम्हें क्या करने का ?

भद्र के यह घण्ट को जत करने के लिए भाग्य पूर्वक आराधना करो । निर्मल भगवान की वाणी सुनकर आत्मा को तृप्त करो । स्वयं के जीवन का मैत्री भाव का प्रतीक बनाओ । परस्पर स्नेह सब और महकार को तुम्हें हमेशा उल्लेखना पना चाहिए । मानव व्यापार संशय को निपट रचना चाहिए । क्याया को दूर करके स्वयं की नील वृत्ति को प्रकट करो ।

ॐ

अर्थी और परमार्थी

अर्थ का काम चक्कर म ल जाने का है और परमाथ का काम चक्कर से मुक्त करने का है । अर्थ की वृत्ति स्वार्थ को पुष्ट करती है और परमार्थ की वृत्ति आमाथ को प्राप्त कराती है अथ अनर्थों की परम्परा उत्पन्न करता है परमार्थ सनिष्ठा की भावना को जागृत करता है । अर्थी मोता है वहा परमार्थी पा लेता है । अर्थी मोता खाता रहता है ओर परमार्थी स्थिर स्थान पर बैठ जाता है । अर्थी बहुत कुछ करता है और परमार्थी जो करने का होता है वही करता है ।

## जीवन मन्त्र

क्या कभी गम विचार किया है ?

काल कब चढ़ कर आनायेगा ? पता नहीं है जान ना है यह निश्चय है किन्तु क्या करना चाहिए इसका कभी विचार किया ? नष्टर गेह पुष्टि के हेतु कितना समय गम किया क्या आत्मा के लिए भी बुद्ध करने का विचार किया है कभी ? शरीर को सन्तान के लिए मग प्रकाश के साधन जुगने का प्रयत्न किया किन्तु हृदय क सिंगार के लिए क्या चाहिए इसका कभी विचार किया ? रूम लाड प्यार से निसने उड़ा किया है ये ही एक दिन भड भडाती आग में होम देंग इसलिए मुझे क्या करना चाहिए कभी विचार किया है बुढ़ाप में सभी करने का फहा बाल बुढ़ाप को देखें क्या इसका कभी विचार किया । भाव के विना कुद भी साथक नहीं होता । स्वय भाव पूर्वक करते हैं अथवा कवल दिखावे क लिए करत है इसका कभी अत्मा में विचार किया ? मन की मौन और इन्द्रियों की प्रसन्नता में तुम्हारे आत्मनेय को कितना बैठना पड़ेगा इसका कभी विचार किया ?

५५



## जीवन मन्त्र

### इतना करना

अतः जाल सुधर जाय इगलिय हमशा परमेष्ठी भगवता का स्मरण और उसमें समा जाने की वृत्ति रक्खो। किसी के लिए कृठ नहीं बन मरने से तो काटे तो मत बनाना। किसी कायति सुधार नहीं कर सकत हो तो बिगाड़ने के लिए तो प्रयत्न मत करो। जीव तुम्हें जितना प्रिय है इसी प्रकार दूसरा को भी प्यारा है इतना अभी मत भूलना। तुम्हारी प्रशंसा कराना चाहते ही ता दूसरा की प्रशंसा करना सीखो। किसी का ते न मरना तो लूट लेने की वृत्ति तो मत रखना। कर नहीं सकते हो तो करना नाला न गरीबों में काटे तो मत बिछाओ। हृदय-मंदिर को प्रिय और चिरेक के रग स भर कर आराधना के अलंकार से सुशोभित करो। तुम्हाका समय, सपत्ति और शक्ति का अपव्यय न हो इसकी पूरी चिंता रखना। शिष्टाचार, मान मर्यादा और समय की दीवाल को लाघ कर तुम्हारे मन का घोडा दीडा न जाय इसलिए नियम की लगाम अपने हाथ में रखना। पूरे भाव के टुकडे करने वाली रैची न बन कर टुकडे माधन वाली सुइ जैसा बनो।

५५

## बीजन मन्त्र

### परमेष्ठी मानिष्य

ज्ञानाचार कि बुद्धि और परिश्रमता तभी हो सकती है जब अखिल भगवत के कहे हुए ज्ञान का चिंतन कर सकें दशनाचार तब ही निक सकता है जब अपुत्र दशनीय गेस मिद्ध भगवत उमे जान कर अपन भागा को समझ सक। आगिगागर का रक्षण तब ही हो सकता है जब आधारा के प्रतिपालक, पालने जाने और प्रचार करने वाले आगाय भगवतों के प्रति मनिष्ठा रख सक। नपागर की रक्षा के लिए राध्याय तप में लीन पूत्र्य उपाध्याय भगवता क प्रति प्रबल भक्ति होना चाहिए और बीयाचार की प्रबुद्धि के लिए माधना माग में रत गेमे साधु भगवता क प्रति अन्यन श्रद्धा होना चाहिए। परिणाम ज्ञानाचार आदि पच चारों का पालने के लिए अखिल आदि पच परमेष्ठिया का मानिष्य ही मवतो मुग्गी महाय भूत हो सकता है।

॥

### दिव्य हॉस्पिटल

अस्पताल में जाने से जैसे रोग का निदान हो जाता है उसी प्रकार जन्म मरण का अन्तःकाल में लगे हुए रोग के निवारण के लिए मंदिर एक दिव्य हॉस्पिटल है।

## मन्दिर यान क्या

शांति का धाम । बाहर की अज्ञानि म पीडित हुए आत्माओं को परम शान्ति दान क लिए ये शांति के धाम हैं । भंजार की दू ची हैं । आत्मधन क भंजार क ऊपर अज्ञानता का ताला लगा हुआ है ज्ञान का प्रकाश इस ताले को गालने का अतीतिक दू ची जैमा है । स्वच्छ दर्पण । स्वच्छ दर्पण में जिन प्रकार अपना प्रतिबिम्ब दिखता है उसी प्रकार आत्मा का प्रतिबिम्ब दिखने के लिए मन्दिर पर स्वच्छ दर्पण है । स्वयं क जीवन का मंत्री भाव का प्रतीक यन्त्राओं । परस्पर स्नेह मप और सहकार को तुम्ह हमेगा उत्तेजना ग्ना चाहिए । मारण व्यापार स स्वयं को निरुत रखा चाहिए । कपार्यों का दूर करके स्वयं को शांति धृति में प्रकट कर ।

ॐ

## विशाल काय टॉवर

टॉवर प्रत्येक को समय का ज्ञान कराता है और यथा समय काम करने की प्रेरणा देता है । इसी प्रकार ये विशाल काय टॉवर आत्मा की अनन्त शक्ति का ज्ञान करना कर जागृत करते हैं ।

## जीवन मंत्र

तुम्हें क्या मिलने का

तू इस पत्रिज जीभ से दध, गुरु क गीत गाने के बदले दूसरा के दोषा को गाता फिरता है इसमें तुम्हें मिलेगा क्या ? इन हाथों से दान देकर मफल करने के बदले दूसरा के लाडाट भगडा की व्यवस्था करना और छिपाने में इनका उपयोग करने में तुम्हें इसमें क्या मिलन का ? इन काना से वीतराग की गायी को घोल सुन कर पत्रिज करने के बदले ज्यष की निगा भरी बातों को सुनने में वापरता है इससे तुम्हें क्या मिलने का ? इन आँगों को देव गुरु के दान कर पत्रिज करने के बदले दुनिया क नट नटनियों क प्रदर्शनों को देखने में लगाता है इससे तुम्हें क्या मिलेगा ? अच्छे काम में बाधा डपत्र करके काम का अटकाने का प्रयास करता है इससे तुम्हें क्या मिलन का ? मन्गी बाता को गोनी दलील से बडादे और नाम कर इससे तुम्हें क्या मिलने का किसी समय किसी क लिए मूडी माछी और मूठ पुराने दिये इसमें तुम्हें क्या मिलने का । पैर में तरे नाम का खाता खोला, लाग्य रुपये जमा कराय और तरा ही हफ रकपा इससे तुम्हें क्या मिलने का ? हबरा के धीमें भराये किरत समय पर भरता रहा और तुम्हें मिलेगा यह आशा रखता है तो भी तुम्हें क्या मिलेगा ?

३॥

## पावर हाऊस और गोला

पावर हाऊस से इलेक्ट्रिक का करंट बराबर मिलता रहे इसलिये तार का कनेक्शन बराबर रखना पड़ता है जो तार टूट जाय अथवा छूटक जाय तो फिर कितना ही मोटा गोला क्यों न हो ? क्या नहीं ए सी व ही सी करंट हो तो फिर भी प्रकाश नहीं पहुँचता है । इसी प्रकार हृदय के पावर हाऊस में से मैत्री भावना का तार टूट जाय तो जीवन भर इधर—उधर अधिकार में या ही भटकना पड़ता है । यदि धीतराग शासन की आज्ञा के अनुसार नियम पूर्वक पावर हाऊस चलता रहे और उसमें से सद्भावना का करंट बहता रहे तो फिर जीवन में अधिकार नहीं दीया सकता है ।



## हम परदेशी

हम सभी परदेशी हैं क्योंकि भटक रहे हैं, स्वप्नी को भटकने की आवश्यकता नहीं । जो स्वयं कक्षा में पहुँचे नहीं उसको परदेशी अज्ञान में कैसे रहने दे सकते हैं, परदेशी परदेश का परवाना पूरा होने ही परदेश जाने की तैयारी करता है—उत्साह करता है परन्तु स्वदेश जान की उस जरा भी भावना नहीं जागती ।

## चीधन मन्त्र

तव तू क्या करेगा !

गूँज सु दग़ इम शरीर में जय रोग आकर घेरा  
हालेगें और कोइ दया काम नहीं करेगी तव तू क्या  
करेगा । तरी ज्ञान की इच्छा नहीं है तो भी यम राष  
का छुलाना आ जाय और जाना पड़े तव तू क्या  
करेगा । कोइ पर दया न करने वाले हे भाई । जिस  
वक्त नेरी दयनीय स्थिति होगी तव तू क्या करेगा ।  
कसी का अपमान करने के पहिले विचार करना कि  
तरा भी अपमान करने वाला निकलेगा तव तू क्या  
करेगा । स्वय का स्वाय पूरा होने पर सभी सम्बन्धी  
धक्क मार कर बहार करने में देर नहीं करेंगे तव  
तू क्या करेगा । किसी भी आत्म कल्याण क काम  
का विचार करने का कहने वाले तुम्हे विचार करने का  
अरसर ही न मिले तव तू क्या करेगा ? सब क  
सामने सिर भारी करने वाले, तर सामने यदि कोइ  
मवा सर आकर सड़ा हो जाये तो फिर तू क्या करेगा ?  
कोट की तारीख को पैसा दकर फेरने वाले तरे लिये  
यमराज क दरबार में तारीख निश्चित हो जावेगी  
तव तू क्या करेगा ।



## कभी पूछा है क्या ?

प्रातः काल के प्रारंभ में उठ कर दुनियाँ का सगर पूछने वाला, स्वयं की क्या ग़रब है ! स्वयं ज्ञात को कभी पूछा है क्या ! विश्व के लोगो की जानकारी रखने वाले पू स्वयं जीव है ! स्वयं की अन्तरात्मा से कभी पूछा है क्या ! उड़ो को चर भी तबलीफ हो जाने पर दीड़ कर चान धाली ने गरीब की भयंकर धामारी म होत हुए भाइ किम प्रसार हो ! ऐम कभी पूछा है क्या ! स्वयं की सुविधा हेतु टेलीफोन से चार चार पूछने वाले ने साधारण स्थिति वाले की सुविधा के लिये कभी पूछा है क्या ! स्वयं हर एक प्रकार की अनुकूलता में रहता है तो कभी दूसरा की प्रतिकूलता का विचार कर उस सहायता करने का कभी पूछा क्या ! स्वयं के लिए पाच पाच चगने रखते हो तो किसी मडक पर मोने धालो की क्या हालत है ! यह कभी किसी से पूछा है क्या ! स्वयं तीव्र समय मौन मने उड़ाने हगे कभी अपने स्वधर्मी क्या करते हैं ! ऐमा कभी किसी से पूछा है क्या ! जो मुझे सम्मान अन्ध्रा लगता हो तो दूसरों का अपमान करके उसे ठेम पहुँचाने का मुझे क्या हक है ! इस बात को स्वयं के हृदय से कभी पूछा है क्या !

## जीवन मात्र

### प्रकाश और घर

घोर अधेरा छा गया हो चारा ओर तारा-गण  
चमकने लगे और अमावस्या पूर्ण रूप में प्रगट हो जाय  
और जब कुट्टन दिखता हो ऐसी स्थिति में भटकते  
हुए मनुष्य को यदि कहीं से एक आध प्रकाश किरण  
दिखाइ दे तो कितनी प्रमत्तता छा जाय ? कारण  
प्रकाश स ही सब भ्रमना जा भ्रमता है और दृग्ग जा  
सकता है । भ्रम क भयकर अधकार को हटाने वाले  
आत्मा को नीतराग क शासन की प्राप्ति दिव्य प्रकाश  
क समान है । इसक कारण चरण करण ओर धरण  
का पूरा ज्ञान हो जाता है । निमसे प्रत्येक की पवित्रता  
छलकती रहती है ।

५५

### उपकारी और अपकारी

जिस जावन को धिक्कार है जो समस्त उपकारों  
को भूल कर अपकार करने की प्रवृत्ति में लग जाता है ।  
उपकारी स्वयं क स्वभाव को कभी नहीं छोड़ता  
अपकारियों को स्वयं की स्थिति में सुधार करना चाहिए ।  
समार में जा कुट्टन वेनाएँ दिखाइ देती हैं ये ऐसे ही  
हीन वृत्ति वाला ने उत्पन्न की है जो थोड़ा सा भी  
ज्ञान हो जाय तो जो वातावरण है उसमें निश्चित  
सुधार हो सकता है अन्यथा ऐसे अपकारी रोते हैं और  
रोते रहेंगे इसमें सन्देह मत समझो ।



## जीवन मन्त्र

### स्वभाव और व्यवहार

जिस दिन समुद्र जैसी गम्भीरता तुम में आ जाय उस दिन तु समझना कि तुम्हें कुछ मिला है। तभी शीतलता के आगे चद्रमा भी लज्जा वान बन जायगा। उम्मी समय तु उन क्षणा को मार्यै समझना तेरा धैर्य और स्थिरता देय कर घड़े बड़े पहाड भी चलाय मान हो जाये उसी समय को तू धन्य समझना। अभी ता तुम में कुछ नहीं है समुद्र के स्थान पर छोटी घावड़ी जैसा है तेरा स्वभाव, जो हमेशा थोडा पानी बढ़ते ही छलक जाती है। तेरा स्वभाव चद्र की शीतलता क समुख भट्टी के अगारे जैसा तेरा स्वभाव है जिसे थोडा स्पग करने ही जल जाता है पहाड नैसा धैर्य और स्थिरता क घदले गाड़ी के पहिये जैसा तेरा वाणी व्यवहार थोड़ी तेर में राजा भोज और थोडा तेर में गगू तली के ममान चलता रहता है जो इसी प्रकार रहा तो तेरा जीवन निरथक बन जायेगा। इसलिए समझ।



## जीवन मन्त्र

### शान्ति नगर

अपूर्व शान्ति नगर में पहुँचने के लिए प्रबल माथी होना चाहिए । मार्ग में पढ़ने हुए दुर्गम पहाड़ तथा भयानक जड़ियाँ में भूल न जाय इमलिए इन परमेष्ठि भाग्यतो का माथ ही परम सहायक हो सक्ता है— जिसका माथ उम पर पूण विश्राम होना चाहिए । विश्राम बिना कभी मफलता मिलती नही विश्रामी क चरण में सब स्थापन करने क परचान ही मरलता म उसमे शान्ति नगर म पहुँचा जा मकता है ।



### स्वदेश की स्तन्त्रता

पच परमेष्ठिओं में सभी स्वदेशियाँ का समावेग हो जाता है । जिसमें अनंतो पहुँच गये हैं, अनेक पहुँचने की तैयारी में हैं और अनका न माग पकड लिया है । स्वदेश जान की इच्छा रखने वाला को परमेष्ठिआ का माय भिये बिना छुटकारा नही है । स्वदेशियों क प्रति जिन्द प्रेम है उसका परदेश में भी लोक चाहना मिलती है । फिर भी नेग याने नेग स्तन्त्रता नितनी स्वदेश म होनी है उतनी परनेग में हो ही नही सक्ती ।

## एक गमक्षे तो

दुनिया में समझाने वाले बहुत हैं किन्तु समझाने वाले बहुत कम हैं। समझाने वाले समझ जाय तो समझाने वाले बहुत हैं। बहुतों को समझाना सरल है किन्तु एक को समझाना कठिन है। एक को समझाने के पर्याय घटा से तो थोड़े परिश्रम से ही समझ जाये हैं। एक को समझाने के लिए एक व शरण में जाना चाहिए जबकि सामने मगठा बनाकर रहना चाहिए। किसी एक के ऊपर अपूर्व निष्ठा रखना चाहिए एक अरिहत की शरण लेना चाहिए और अकेले मन को समझाने के लिए होना चाहिए एक का पक्का हृदय मन्त्र यदि एक समझ जाये तो फिर बहुत से समझ जायेंगे।

३४

## परमेष्ठि की प्रीति

परमेष्ठि की प्रीति प्रज्ञा की ओर ले जाती है इससे विमुक्त रहना अर्थात् अधिकार को निमन्त्रण देना है परमेष्ठिया की भक्ति आत्मशक्ति को बढ़ाने वाली है यह शक्ति अमीम होता है इसके प्रकट होते ही स्व और पर का भेद जल्दी समझा जा सकता है और दिव्यता के दर्शन हो जाते हैं।

## स्वदेशी और विदग्धि

परदेशी की प्रीत इतनी ही है जितनी स्वदेशी की प्रीत  
 कहा तक, परदेशी की प्रीत इतनी ही है जितनी स्वदेशी  
 की प्रीत हमेशा क इतिहास में ही देखी और  
 परदेशी है सभी समाज के लिए ही। स्वदेशी है  
 नगर स्वदेशी है परदेशी के लिए ही। स्वदेशी  
 और न उघड़ घड़ा तक ही है। स्वदेशी के सम्बन्ध  
 जम जम का इतिहास में ही है। स्वदेशी का ही  
 निपटारा होगा।

६

## स्वदेशी व्यापार

जहां तक मुझ के लिए है, स्वदेशी और अंगरेज  
 का आचरण नहीं करता। स्वदेशी ही है स्वदेशी स्वयं का  
 इतिहास। स्वदेशी ही है स्वदेशी स्वयं का  
 मैं गहरा विचार है। स्वदेशी ही है स्वदेशी स्वयं का  
 कामनाएं अधूरी रह सकती हैं। स्वदेशी ही है स्वदेशी स्वयं का  
 हटाने के लिए परदेशी के लिए ही है। स्वदेशी ही है स्वदेशी स्वयं का  
 नितांत आवश्यक है। स्वदेशी ही है स्वदेशी स्वयं का

## मुश्किलों और इच्छाएँ

परशेष से निरुल कर स्वप्न की आर नान धान  
 त्र्यन्ति जो रास्ते में कितनी ही मुमीयते उठाना पड़ती  
 हैं तो भी क्या वह घबराकर स्वप्न ज्ञान की इच्छा  
 को छोड़ सकता है। नही मुश्किल आर कठिनाइया  
 से अधिक तमना है स्वप्न पहुँचने की। इसीलिये  
 यह सभी को गोरुकर जाता है इमी तरह स्वप्न तरफ  
 जाते हुए इम आत्मा को जो कोई आपनि अथवा  
 मुश्किल आये इम न क्या रय के दश को भूल जाय ?  
 कौन मगमदार मनुष्य शेष को भूल सकता है।

३५

## आराधना अरिहत की

प्रयत्न प्रचारक, उपश्रक अरिहत है जहाँ तक  
 कर्णद्रिय स्वस्थ न हो वहा तक उसकी वाणी कान  
 तक नहीं पहुँचती। स्थिरता के अभाव में ये अन्तर के  
 पापों को हटाने वाली नहीं। इसीलिये कर्णद्रिय स्वस्थ  
 हो तभी मुनकर समझ सकते हैं इसकी आज्ञा और  
 यह समझ जाय तब ही सच्ची आराधना हो सकती  
 है अरिहत भगवान की।

## जीवन मन्त्र

### इतना चाहिए

ज्ञान देने वाले अरिहत, दर्शन देने वाले मित्र  
आशा का शिष्य देने वाले आचार्य, ज्ञान क समर्प  
लाने वाले माधु इन पात्रों में मय ममा जात हैं । इन  
पात्रों के अतिरिक्त दूसरे के पास कुछ भी मित्रन का  
नहीं । इसीलिये इन पात्रों के ऊपर भक्ति प्रीति द्रव्य  
पात्र तब ही मानना चाहिए कि जीवन धन्य है और  
धन्य समझना चाहिए उस दिन को । दिल के दिवान-  
आम में परमेष्ठियों के गीत का गुञ्जारण हुआ तब  
इमका जात होता रहे और इमका ही शक्य हुआ  
रहे ऐसी मरी मनत प्रायता है । यह मित्र के शक्य  
वासी मय कुछ व्यर्थ है ।

५१

। किंशु शुक

परलिया से निर्मोही होकर ~~...~~  
दीवाने वाला कमरा परदेश की नग ~~...~~  
को भूठकर स्वदेश की त्पारी ~~...~~  
लाटायित हो जाता है ।

## ममत्व और समत्व

ममत्व भाग्य वाला है और समत्व भाग्ये वाला है । ममत्व का विहृत रूप समार और समत्व का शुद्ध रूप मुक्ति है । ममत्व बढ़ने से आत्मिक बढ़ती है तथा समत्व बढ़ने से विरक्ति बढ़ती है । आत्मिक म ध्यान है वही विरक्ति में स्वतंत्रता है । आत्मिक से राग बढ़ता है और राग फैलता है विरक्ति से विराग और विराग से तत्त्व मुग्धी तन्त्र का विनाम होता है ।

५५

परम तेज

सिद्ध भगवन्त लोक के अग्र भाग में विराने हुए हैं । ज्ञान के चतुर्द्वय है यह स्थिर है इसके विषया पर विनय प्राप्त की हो तो अस्पी के दशन हो सकते हैं यदि इसमें विचार हो राग द्वेष की परिणती हो तो यही चतुर्द्वय राडी में धकेल देते हैं इसीलिण चतुर्द्वय के अ य विषया को जीत लिया जाय तो ही परम तेज क दिव्य प्रकाश से पाया जा सकता है ।

## स्वय की वचना

अपना शुभ चिंतक कोई नहीं है, केवल मात्र एक परमेशी ही अपन शुभेच्छुक व हितेच्छुक हैं। बाहर से प्रेम भरा व्यवहार रखने वाले समय आने पर अंतर से कानिह काम करते हुए दूरत नहं। वही परमेष्ठी भगवत तो निस समय कदा नहं मिलता वहा उसके भी प्रत्येक वे आश्रय दाता घनत हैं। नको नहं तो स्वार्थ है और न किसी से लेना देना। निश्चाय कल्याणकारी विश्व बःमल ऐमे परमेष्ठिया से दूर रह कर जो मचमुच पराये हैं उसके ऊपर ममत्व रखते हैं वे स्वय की जाति की वचना कर रहे हैं।

५५

## दिव्य दर्शन

परमष्ठिया की शीति प्रकाश की ओर ले जाती ह इसमे विमुक्त रहना अधकार को निमन्त्रण देना है। परमष्ठिया की भक्ति शक्ति को घटाने वाली है यह शक्ति अपार होती है। इस शक्ति के प्रगट होने ही स्व और पर के भेद जल्दी ही समझे जा सकते हैं। और दिव्यता के दर्शन हो जात हैं।



## वीरन मंत्र

### मभी मिलेंगे

क्रोध मे मतम शांति कैसे न सकता है ? अज्ञात हृदय को । मान मे अकड़ कर रहने वाला नम्रता का मिटास कैसे चर सकता है ? माया में मोत्र मानने वाला निष्कपट प्रगति या परिचय निम्न तरह दे सकता है ? और लोभ म तिमग्न रहने वाला सतोप या पाठ कैसे सीख सकता है । सयना एक ही स्थान पर दशन करना हो तो आओ इन परम पूज्य परमेष्ठिआ की शरण में । शांति और नम्रता का जहाँ साक्षात्कार हो सकता है और माया और लोभ के स्थान पर सरउना और अपूर्व सतोप के दशन हो सकते हैं । क्योकि परमेश्टी क प को वही आत्मा पा सकती है जो कपायिक गृति को हटाकर आत्म शांति की तरफ चन्ती है ।

५५

### शास्त्र का सार

महामन्त्र के एक भी पद का अपलापक महामन्त्र का ही अपलापक है इतना ही नहा वह परमेष्ठी की भक्ति के प्रति विहीन है परमेष्ठी या परमेष्ठत्व इत्ने घाहर नहीं होता अत इसमें जैन शासन का तत्व समाया हुआ है । महामन्त्र के एक एक अक्षर में ममस्त शास्त्र का सार समाया हुआ है ।

## परमेष्ठियों की प्रतिष्ठा

हृदय के सिद्धामन के ऊपर परमेष्ठियों को प्रतिष्ठित किया जाये तो ही इस सिद्धामन की गोभा है। अथ इष्ट चित्त हैं वे मव या नो अनिष्ट में परिणामने हैं अथवा जन्मेष्टि में परिणाम भूत होते हैं। उहाँ परम श्रेष्ठ ऐसे परमेष्ठी तो हमें ही परमात्मा स्वरूप महा स्थिर रहने वाल हैं।

ॐ

## पारममणि

जिमका स्वयं जेहे का होने ही लोहा मोना घन पाता है ऐसा पारममणि जिसे मिल पाता है जमरा भाग्य लग गया है जेना मममना चाहिण। जेमे पारम मणि को कौन नहा चाहना ? मिलन के परचान् इसना उपयोग जौन नहीं करता है। उपयोग करने वाला क्या नहीं प्राप्त कर सकता है ? जेसे पारममणि को पाना साधारण वस्तु नहीं है।

## जीवन मन्त्र

### महा मन्त्र की शरण

मीधम में तप हुए प्राणी को गहर वृक्ष की छाया जितनी आनन्द दायक होती है ? रण ( रेगिस्थान ) में जान वाले प्यास भ दृग्दी मनुष्य को जल से भर तालाब क मिल जाने पर जितनी शांति होती है ? श्रम से थके हुए प्राणी को आराम घर जितना आनन्द दायी होता है इससे बहुत अधिक अनन्त गुण प्रमोद कारक शांति प्रदायक और आराम प्रद होता है मन्नाधिरान श्री नमस्कार महामन्त्र की शरण । कारण गहरी छाया वाला वृक्ष गर्मी को शांत करने वाला होता है किन्तु महामन्त्र तो जन्म जन्म की चपलता के परम ताप का उपशमन करने वाला है और ये तो कल्प वृक्ष है सरोवर तो थोड़ी देर की तृषा को शांत कर सकता है वहीं महामन्त्र का शरण अनादि काल की तृषा को शांत कर देने वाला है । आराम घर से समय आने पर जाना पडता है वहाँ मन्नाधिरान ऐसे आराम घर में ले जाता है जहाँ फिर से आना ही न पडे ।

ॐ

## जीवन मंत्र

### कार्यकर्ताओं का आदर्श

कर्त्तव्य का पालन यही कार्यकर्ताओं का प्रतीक होता है, अनुगत बद्ध रहना कार्यकर्ताओं का ध्येय होता है और नियम पूर्वक ध्येय से बड़ा काम करना यह कार्यकर्ताओं का आदर्श होता है सभी से दिव्य मिल कर रहने की प्रवृत्ति यह कार्यकर्ताओं का परिचय का प्रमाण है अनुकूलता और प्रतिफलता स्वयं कर्त्तव्य में पाए कर्त्ता सभी अनुगासन से विचलित नहीं होता है ऐसे कार्यकर्ता ही देश व समाज में जागृति और जीवन का सगर कर सकते हैं ।

३२

बाधक हैं चक्र

मासार्थिक मनुष्यों की मोह की स्थिति बड़ी विचित्र होती है किसी भी स्थिति में वह स्वयं छूटने को तैयार नहीं और किसी को छूटने देने के लिए भी तैयार नहीं यह दुःखद स्थिति ही प्रगति में हमारा के लिए बाधक बन जाता है जिसे स्वयं की स्थिति का मान होता है यह कभी भी ऐसे चक्र की स्थिति में नहीं पड़ता ।

## जीवन मन्त्र

### सच्चा धन

व्यवहार में कहावत है कि "धनु विना नर पशु" इसका अर्थ यह नहीं है कि विना धन वाला मनुष्य पशु की जैसी में गिना जाता है परन्तु यह धन कौसा ? चल या क्षण भंगुर है ऐसा नहीं और न मृग वृषणा उद्धेक है किन्तु शाश्वत धन सम्यक् ज्ञान रूप धन है इससे रहित मनुष्य अशुभ पशु की गिनती में गिना जाता है कारण इससे विना मार अमार, सत्य असत्य का ज्ञान नहीं हो सकता है और विवेक हीनता बढ़ती जाती है ।

१११

### नमस्कार

त्रिसप्तम से 'म' नगर चला गया है उस ही नमस्कार करना चाहिए वहा 'म' कार हट जाता है वही सच्चा नमस्कार होना है समर्पण की सम्पूर्ण भावना जाग्रत हो उस ही नमस्कार सफल होता है नमस्कार से दूर होता है अधकार, गाढ अघेर को दूर हटाने के लिए भाव पूर्वक किया हुआ नमस्कार अपूर्व शक्ति शाली तेज पुत्र का काम करता है । परमेष्ठिया को किया हुआ नमस्कार परम श्रेष्ठ नमस्कार कहलाता है ।

## वचन का मूल्य

तुम्हारा दरिद्रता का प्रदर्शन मत करो जो नहीं जात होंग वरुं भी तुम्हारी गधर पड़ जावेगी। धन से दरिद्र हो ता भले ही हो किन्तु गरा दरिद्री तो वचन दरिद्री है निमके पास योग्य वचन नहीं योग्य शब्द नहीं है तो चुप रह जाना चाहिए किन्तु वचन का दियाला निमालन की बात न करो। जीवन में धन से अधिक वचन का मूल्य है, इसका यदि दियाला निफल गया तो निरचय समझो तुम कभी भी उन्नति नहीं कर सकन हो और जीवन भर के परिश्रम का परिणाम शून्य आवेगा।

५५

## मज्जना वन

मज्जन की स्मृति प्रेरणा देने वाली होती है इसलिए हमारा स्मरण अवश्य करते रहना चाहिए मन्त्र जिसके मन, वचन और काया में ठोस कर भरा है उसी को मज्जन कहा जाता है। उसी को सज्जनता की उपाधि गोमा देती है।

## भावना और दुर्भावना

सद्भावना आत्माभिमुख की ओर ले जाने वाली है दुर्भावना मसार रि तरफ ले जाने वाली है। सद्भावना वाला व्यक्ति स्वयं के आत्म बल पर चलता है। दुर्भावना वाला व्यक्ति दूसरे के आश्रय के ऊपर चलने वाला होता है। सद्भावना में जीवन-मात्र का कल्याण का अमृत भरा हुआ है दुर्भावना हलाहल जहर है। अमृत में अमरता मिलती है जहर से जीवन बीच में ही समाप्त हो जाता है भावना अंतरार में प्रकाश फैलाने वाली है दुर्भावना प्रकाश में अंधकार करने वाली है।

३१०

## शान्ति और उग्रता

घात करो किंतु शान्ति से गर्मी में घबराहट फैल जाती है, शान्ति में होने वाली घात में सुदृढ़ता और मरलता रहती है, गर्मी से घात बिगड़ जाती है घात एक ही होत हुए भी कहने की शैली पृथक् पृथक् होने से परिणाम सुगमगरी अथवा दुख जारी हो सकता है इसीलिए शान्ति के साथ योग्य रीति से कहना और बोलना चाहिए।

## मक्का मभी

मनुष्य जीवन में बहुत कुद्र करता है किन्तु परिणाम में शून्य ही आता है कारण मक् मभी का है स्वय का कुद्र न् होता मक् मभी ले लते ह् स्वय स्वय का कुद्र नहा ले मक्ता। जो मिल रहा है यक् मक् का नही है स्वय का मक् का मिल जाता है तक् ही अपूर्व आनन्द और उल्लाम प्रक् होना है स्वय का प्राप्त करने के ह्नु मक् में लान होना पडता है। जक् एक्त्त में बैठ कर विचार किया जाय तक् ही मनुष्य इम बात को समम मक्ता है कारण वि बात गभीर है किन्तु इस सममन क पश्चान् ही उसका मक्त्त समभा जा सकता है।

५०

## लेने के पूर विचार करो

तुम बिना विचार किसी भी बात की जवाबदारी अपन ऊपर मत ले भविष्य का विचार करो और ध्या र दो। इसका विचार नही किया तो निश्चित सममो कि जवाबदारी लेने क पश्चान् पक्त्ताना पडेगा। दुनिया के लोग दोना आर विगड़न वाले हैं स्वयं की बात का ब्याल स्वयं को ही रक्ता चाहिण्।



## ज्ञानी और अर्ध ज्ञानी

क्या कोई किसी के स्वभाव को बदल सकता है। ज्ञानी कहते हैं कि समझदार ने स्वभाव को बदला जा सकता है अथवा सर्वथा आज्ञानी के स्वभाव को बदला जा सकता है किन्तु अर्ध ज्ञानी के स्वभाव में परिवर्तन नहीं लाया जा सकता उसरी स्थिति घुत्ते की पूछ जैसी होती है। इसीलिए अर्ध ज्ञानी बनना ठीक नहीं तथा सर्वथा निरक्षर भट्टाचार्य बनना भी ठीक नहीं इसीलिये ज्ञान प्राप्त करो। ज्ञानदान और समझदार बनो।

५५

## विनय का फल

बिना विनय के सब व्यर्थ है। जितना परते में आता है वह तभी सफल हो सकता है जब उसके मूल में विनय हो। जिसने मूल में विनय होता है वही काम सिद्ध हो सकता है। जहाँ तक विनय नहीं वहाँ तक सफलता दूर रहती है। विनयरे हुए फूलों को एकत्रित करने के लिए मनुष्य को नमना पड़ता है बिना नमते उसके हाथ में कुछ भी नहीं आ सकता है, इसी प्रकार बिनयरे हुए मनुष्य गुणों की प्राप्ति के हेतु बिना विनय के काम होना कठिन है।

## जीवन मन्त्र

### शिक्षा और शिक्षित दशा

शिक्षा प्राप्त करना और शिक्षित होना इन दोनों में भारी अन्तर है शिक्षा हम लाक में राम के हेतु काम में आती है शिक्षित दशा परमार्थिक दृष्टि का काम को समझती है। उतमान में शिक्षा का अनुगम मर ही ओर बढ़ता हुआ दिखाई दे रहा है किन्तु शिक्षित होना किसी को पमद नहा अन्यथा मानव मध्यता किमा समय दयनीय ही नहीं हो सकती।

॥

### धर्म का फल

जीवन और धर्म का निकटतम सम्बन्ध है। धर्म को पृथक रख कर केवल जीवन व्यतीत करने में आता है तो वह जीवन नहीं किन्तु प्राण रहित पिंडर को केवल मीचना है जिससे महार म पतिन भी पावन हो जाता है। अयोग्य व्यक्ति योग्यता को प्राप्त कर सकता है। स्वयं को छाड़कर नीति और नियम को प्राप्त करना यही धर्म है। जीवन मात्र का स्वयं क जैसा मानकर जैसे सुख और दुख का अनुभव स्वयं को होता है उसी को अपना करके प्रत्येक क विषय में विचार करना यही धर्म है।

## जीवन मन्त्र

### मसार और मसारी

क्रोध और मान लेना द्वेष को बढ़ाने वाले हैं, माया और लोभ राग बढ़ाने वाले हैं, मारा मसार इन अन्धी कारणों का शिकार बना हुआ है मसार में प्रिरक्त रहने वाले जो ये स्पष्ट नद्दा कर सकते हैं । इन से जो दूर रहता है वह मसारी नदी मसार में रहने हुए जा इन में दूर रहता है वहाँ सुखी रह सकता है ।



### बीचमा पदाँ

बीच में कपड़ा ( पदा ) आ जाता है तब स्पष्ट और स्वन्द वस्तु भी अस्पष्ट तथा मदी दिखाई देती है । वह वस्तु मदी नहीं है किंतु देखने वाले की दृष्टि क बीच में आने वाला पदा मद कर देता है इसी प्रकार ज्ञान क ऊपर पदा पड़ गया है सम्यक ज्ञान के ऊपर पदा पड़ गया है और इसी से ज्योतिमय ज्ञान प्रकाश भी मद पड़ गया है रास्ता दिखाई नहीं देता है तब ही रास्ता दिखने के लिए प्रकाश की आवश्यकता है । इस प्रकाश को प्राप्त करने के लिए अज्ञान क पर्दे को दूर करो और सम्यक ज्ञान प्राप्त करो ।

## जीवन मन्त्र

### भय, निर्भय और अभय

जहाँ तक भय रहता है वहाँ तक भय पीछे का पीछे लगा रहता है। भय से मुक्त होकर निःशय स्थिति होता है तब ही भावा का जोर रहता है और इमने भी बढ़ कर अभय स्थिति हो जाती है। तब स्वभाव दगा की स्थिति प्राप्त हो जाती है इसीलिए भय से निर्भय और अभय बनने का परमश्रेष्ठ माग है परमेश्वरी महा मन्त्र की अराधना। महामन्त्र क आराधन करता नहीं है चाहे उसके सामने कोई भी स्थिति हो और वह किसी का डराता भी नहीं है। वह तो स्वयं क आनन्द में मग्न रहता है। निम्नके पीछे भय रहता है वह हमेशा दया का पात्र बना रहता है।

५४

### विन्दु मन्त्र

नीचे की ओर दीड़ना मन्त्र के लिये मगल है किन्तु आराधना क पहाड़ के ऊपर उठने वाला कोई एक धीर ही मिलता है। ज्ञान प्राप्ति हेतु गंगा की जा मरती है परन्तु ज्ञान में जहाँ भी गंगा को स्थान नहीं।

## तीरा मन्त्र

### ममार और मसारी

क्रोध और मान लोग द्वेष को बढ़ाने वाले हैं, माया और लोभ राग बढ़ाने वाले हैं, मारा मसार इन्हा अपनी कारण का शिकार बना हुआ है मसार स प्रिय रहने वाले को ये स्पष्ट नहीं कर सकते हैं । इन में जो दूर रहता है वह समाग्री नहीं ममार में रहने हुए जो इस से दूर रहता है वही सुखी रह सकता है ।

ॐ

### बीचका पद

बीच में कपड़ा ( पदा ) आ जाता है तब स्पष्ट और स्वच्छ वस्तु भी अपष्ट तथा मनी दिखाई देती है । वह वस्तु मदी नहीं है कि तु देखने वाले की दृष्टि के बीच में जाना गया पदा मद कर देता है इसी प्रकार ज्ञान के ऊपर पदा पड़ गया है सम्यक् ज्ञान के ऊपर पदा पड़ गया है और इसी से ज्योतिमय ज्ञान प्रकाश भी मद पड़ गया है रास्ता दिग्माह नहीं होता है तब ही रास्ता दिखने के लिए प्रकाश की आवश्यकता है । इस प्रकाश को प्राप्त करने के लिए अज्ञान के पर्दे को दूर करो और सम्यक् ज्ञान प्राप्त करो ।

## भय, निर्भय और अभय

जहां तक भय रहता है वहां तक भय पीछे का पीछे लगा रहता है। भय से मुक्त होकर निर्भय स्थिति जानी है तब ही भाग का जोर रहना है और इससे भी बढ़ कर अभय स्थिति हो जाती है। तब स्वभाव दगा की स्थिति प्राप्त हो जाती है इसीलिए भय से निर्भय और अभय बनने का परमश्रेष्ठ मार्ग है परमेश्वरी महा मन्त्र की आराधना। महामन्त्र का आराधक डरता नहीं है चाहे उसका सामने कोई भी शक्ति हो और वह किसी को डराता भी नहीं है। वह तो स्वयं का आनन्द में मस्त रहता है। जिसके पीछे भय रहता है वह हमेशा दया का पात्र बना रहता है।

५१

## विंदु मंत्र

नीचे की ओर दौड़ना मंत्र के लिये मरल है त्रिजु आराधना का पन्नाड़ के ऊपर चढ़ने जाला कोई एक धीरे ही मिलता है। ज्ञान प्राप्ति हेतु गंगा की ना मरती है परन्तु ज्ञान में वही भी शक्त को स्थान नहीं।

## जीवन मन्त्र

### मग्नह करके रखो

मन्त्री शक्ति मित्तयर्था कम योलने वाले को ही मिलती है । मन्त्र का मित्र होने के लिए सत्रमे मित्रता रखना अमोघ उपाय है । आधि, व्योधि और उपाधि से बचने के लिए देव गुरु और धर्म को स्वीकार करना यद्वा श्र प्तम है । अच्छे फल के प्राप्ती के लिए अच्छे बीज बोना चाहिए । दूसरा क उपर कानू रखन की धृति के बजाय स्वय के मन और इन्द्रियों पर कानू रखने वाला मरान है । मारने की इच्छा हो तो स्वय की वासनाओं को ही मारना अच्छा । सत्र जाय तो जाने दो, किन्तु स्वय या मन्त्र और शील न जाय इसकी शोक्मी रखो । रत्न को फाच क टुकड़े के बदले में नहीं दिया जा सकता । इसी प्रकार मनुष्य जन्म भैतिक गुणा में ही न चला जाय इसको पूरी रित्ता रखनी चाहिए । दया का दिया हृदय में भण्डता रह तो ही दुःख न बसा जा सकता है । जिस जीवन में सम्बन्ध छाग का प्रकाग न हो उस जीवन धारी को भटकने के सिवाय दूसरा रास्ता मिल ही नहीं सकता ।



## तीन चक्र

भय भ्रमण समार चा । यह चक्र चलता रहता है  
 मरणा कारण है कम चक्र । इसको हटाने की प्रेरणा  
 देने वाला और प्रेरणा को गतिगाली बनाने वाला है  
 धम चक्र । अथान अत में मरनामुसी श्रेय साथ लिया  
 पात्र और स्व स्थान प्राप्त कर लिया जाने उमरो कहा  
 जाता है सिद्ध चक्र । कर्म चक्र भय का बनाने वाला धम  
 चक्र भावा का उद्वाने वाला और सिद्ध चक्र आत्म गुणा-  
 त्मक स्वभाप में स्थिर करने वाला है । कर्म चक्र अथान्  
 मसार । धर्म चक्र अथान समार सागर का किनारा और  
 सिद्ध चक्र अथान मसार स उद्गमन । कम चक्र के  
 कारण ही भय भय की कहु छीला का दर्शन करना  
 पड़ता है । धर्म चक्र क मरुत्व क प्रताप म भाप का अमृत  
 जीवन को मधुरना पाग बनाता है । सिद्ध चक्र के पुण्य  
 प्रताप से सर्व मत्ता मुक्त परमानन्द हा नही सह आनन्द  
 के मरौकष्ट उच्च स्थान पर आसीन होता है । वहि-  
 रात्मा, अतरात्मा और परमात्मा इन तीन श्रेणियों को  
 समझने क परचाप ही अनता नदी पद को प्राप्त किया  
 जा सकता ह । वाक् पदार्थ में अपने पन का आरोपण  
 करना और स्वय को मममत्ता यह वहिरात्मा दशा है अथान  
 र्म चक्र का गिरलाना । वाक् पदार्थों से स्वय का सम्बन्ध  
 छोड़ कर अन्तर में गति करना और उसमें लीन रहना



## मग्न कर्के रक्तों

मन्त्री शक्ति मितव्ययी कम धोलने वाले को ही मिलती है। सब का मित्र होने के लिए मरसे मित्रता रचना अमोघ उपाय है। आधि, व्यधि और उपाधि से बचने के लिए गुरु और धर्म को स्वीकार करना यही श्रेष्ठतम है। अच्छे फला के प्राप्ति के लिए अच्छे बीज बोना चाहिए। दूसरों के उपर कानू रमन की प्रति क यजाय स्वयं के मन और इन्द्रिया पर कानू रखने वाला महान है। मारने की इच्छा हो तो स्वयं की वामनाभा को ही मारना अच्छा। सब जाय तो जाने दो, किंतु स्वयं का सत्य और शील न जाय इसकी चोखमी रखो। रक्त को रक्त के दुकड़े के बदले में नहीं दिया जा सकता। इसी प्रकार मनुष्य जन्म भैतिक सुखा में ही न चला जाय इसकी पूरी चिन्ता रखनी चाहिए। दया का दिया हृदय में गलफता रह तो ही दुःखा से बचा जा सकता है। जिन जीवन में सम्यक ज्ञान का प्रकाश न हो उस जीवन धारी को भटकने के मित्राय दूसरा रास्ता मिल ही नहीं सकता।

## रत्न वर्णिना

त्वमान् पानी के समान होना चाहिए जैसी परिस्थिति हो उसके अनुसार करने हुए भी स्वयं को पृथक् रखना चाहिए। सज्जन मनुष्य इशार से समझ जाते हैं कम बालव हैं और हृदय में विचार करके बोलते हैं। बहुत हसना यह अज्ञानता की निशानी है। जिस आत्मा का पालन किया जाय उसी को कहने हैं आराधना। धर्म का काम विधि बताने का है दश का समन तो रोगी को स्वयं हो करना पड़ता है। जीम ही हसाने वाली और रूळाने वाली है। अर्थ का काम चक्कर को बढाने वाला है और परमार्थ का काम चक्कर से मुक्ति दिलाता है। योग्य कारीगर के हाथ में आने पर बेडौल पत्थर भी पूज्यता का स्थान प्राप्त कर लेता है। अनुचित आचरण पाप और ममुचित आचरण पुण्य कहलाता है। क्षमा देना और मागना ये वीरत्व का लक्षण है। अधिक फुरसत आलस को उत्पन्न करती है मक्कड़ जैसा मन कभी रानी और कभी कानी बना देता है। व्यक्ति के निर्माण की आधार शिला उसके अन्तर में रहे हुए विचार हैं। सद्भावना का मन्त्र धराचर चालू रहे तो उसके द्वारा दिव्य प्रकाश प्राप्त किया जा सकता है। मसूरियों का साथ समार में कसारेगा और त्यागियों की संगति मुक्ति की ओर ले जायेगी। भरे हुए चादल बिना कुड़

## जायत मन्त्र

यद् अतरात्म अथात धम चक्र की शरण । इमगे भी  
आगे बढ़कर परमेशु आत्म गुण की प्राप्ति में तल्लीन रह  
कर उभी भान के अनुसार स्थिति प्राप्त करना यह पर-  
मात्मा दशा अथात निद्ध चक्र में स्थिर रह कर स्थिर  
रहना ।

५१

## बेड़ी और पावर

हे मनुष्य । बेड़ी में पावर भर कर रखने में आये तो  
अधेरे में छिनियाला हो जाय । नीची जमीन का  
स्थाल रह जाये और सीध रास सरलता से चला जा  
सकता है । हृदय की बेड़ी में धीतराग आना का धन्य  
और यद्धा रूप पावर भर हुए रग और फिर देय । तुम्हें  
सभी कुछ लग जाये स्पष्ट । इसके प्रकाश में ही फिर  
नित्यानन्द का ज्ञान हो सकता है ओर एह्ने, ट्रेकरे प्रकार  
दीखने लगेंगे ।

५२

## जीवन मंत्र

### रत्न वर्णिना

स्वभाव पानी के समान होना चाहिए जैसी परिस्थिति हो उसके अनुसार करत हुए भी स्वयं को पृथक् रखा चाहिए। सज्जन मनुष्य इशारे से समझ जाने हैं कम बोलते हैं और हृदय में विचार करके बोलते हैं। बहुत हसना यह अज्ञानता की निशानी है। जिस आत्मा का पालन किया जाय उसी को फलतः हैं आराधना। वैश का काम विधि बताने का है दश का सज्जन तो रोगी को स्वयं ही करना पड़ता है। जीभ ही हसाने वाली और रुलाने वाली है। अर्थ का काम चकर को बढ़ाने वाला है और परमार्थ का काम चकर से मुक्ति दिलाता है। योग्य कारीगर के हाथ में आने पर बेटील पत्थर भी पूज्यता का स्थान प्राप्त कर लेता है। अनुचित आचरण पाप और समुचित आचरण पुण्य कहलाना है। समा दना और मागना ये वीरत्व का लक्षण है। अधिक पुर सत आलस को उत्पन्न करती है मङ्गल जैसा मन कभी रानी और कभी राजा बना देता है। व्यक्ति के निर्माण की आधार गिला। उसके अन्तर में रहे हुए विचार हैं। मन्त्रभाषना का मन्त्र बराबर बालू रह तो उसका द्वारा दिव्य प्रकाश प्राप्त किया जा सकता है। सत्कारियों का साथ सत्कार में फसावेगा और त्यागियों की सगति मुक्ति की ओर ले जावेगी। भरे हुए बादल बिना कुछ

## जीवन मात्र

बोल धरा करके चन्न जाने हैं। गर्भीगता मनुष्य का स्रतोगुणी गुण है। जीवन में धन की आवश्यकता है या 'जीवन धन' की ओर नृष्टि है ? इसका विचार करना चाहिए। तुम श्रम के फल-पत्र को समझो और उसके पालने हेतु दत्त चित रहना जो मैं तुम्हारी महानता है।

५५

## शक्ति का उपयोग

शक्ति सशक्त बना सकती है तथा अशक्त बनाने का सामर्थ्य भी इसी में है। प्राणी मात्र में शक्ति अधिक अथवा कम प्रमाण तो रही हुई है ही और उन्नी के आधार पर हृदय में रही हुई इन्द्राभा और आशाभा को पूरा करने का उसका प्रयत्न चालू ही रहता है। तो भी शक्ति का उपयोग करने आये तो ही उसका सदुपयोग हुआ ऐसा कहा जायेगा। अन्यथा दुरुपयोग में तो नर नहीं लगती है जो सदुपयोग करना जानता है उसी की कीमत हाती है शक्ति का सदुपयोग करने वाले व्यक्ति का खान जगत के अन्तर में होता है जिमको इसका ध्यान ही नहीं वह मादा दुःख ही उठाता रहता है। शारीरिक शक्ति वद शक्ति नहीं है कभी कभी पहलवान गिर जाने वाले को दुबली काया वाला बिना बल के

## जीवन मन्त्र

कला म उसे भुका देता है। यह उही आम शक्ति है  
 निममें यह आत्म शक्ति होती है वह वमसी इन्द्रानु-  
 सार काय कर सकता है। शक्ति का मनुष्ययोग का नव  
 ही आत्म शक्ति को प्राप्त किया जा सकता है। पर म  
 पृथ्वी सुगंध की आगा करन वाले शक्ति का व्यय  
 करत हैं इसम कौन सी सिद्धि मिल सकती है ? आम  
 शक्ति को प्राप्त करने क लिए उमक कारण भूत रहे  
 हुए धमानुष्ठान आगया की आर तन, मन और यचन  
 को भुक्ता आवश्यक है इस तरफ चेतै पैर बढ़न जान है  
 वैसे भार का भूत हल्का होता जाता है और भार भूत  
 समीप आता जाता है। स्वयं क परिचय का प्राप्त करने  
 में जो शक्ति का व्यय होता है वह सद्व्यय कह लाता  
 है और दूसरा की प्राप्ती के लिए शक्ति का व्यय अव्यय  
 कहलाता है। सदुपयोग उसे ही कहा जायेगा जो  
 स्वयं क लिये हुआ तो। वसीलिए शक्ति मय को मिली  
 है किंतु विचार पूर्वक योग्य उपयोग जो करता है मन्त्री  
 सफता उसे ही मिलती है।

## जीवा मन्त्र

दो शब्द

त्याग और भोग, दो शब्दों के निरलेपन से युक्त है, प्राणी मात्र का जीवन समाप्त हो दो शब्दों को ही सुख दुःख ही उपमा ही जा सकती है रात और दिन वही अथवा मृत और प्रसन्नता यह सभी दो शब्दों में ही समाया हुआ है। निरलेपन प्रमाण में त्याग उतने ही प्रमाण में योग की फल और शक्ति ही सुख का उद्भव जीवन निराशर र मृत्यु का उदय और प्रसन्नता का प्रवाह बढ़ता जाता है। त्याग नही होना है भोग बढ़ता है, भोग से भोग घटते हैं, रोग से शोक बढ़ते हैं, और अन्त जीवन और यह ससार सारा चक्र जैसा घात जाता है।

ॐ

### मनुष्य और काच

छोटा सा काच मनुष्य के चेहरे का माप निराल सक्तता है उसका मुह किस प्रकार का है यह बता देता है देखने ही समझदार व्यक्ति जो दाग लगे हुए है उन्ह मिटा देते हैं इतने मात्र के लिए ही काच का मूल्य है यह काम साधारण नहीं है। इसी प्रकाश अन्तर दशा हेतु निर्देह भगवान की प्रतिमा परम उपकारी है जहां तक धीतराग दशा को प्राप्त किया जाये वहाँ तक धीतराग की मूर्ति का दर्शन महान सहायक बन सकता है। इसीलिए मनुष्य को अन्तर देखने के लिए निर्देह भगवान की मूर्ति का दर्शन करना चाहिए।

## जीवन मन्त्र

### स्वयं सा कौन

स्वयं का कौन ? तब हम अपना मान ले वही जोड़ समय में दूसरा बनकर गढ़ा हो जाता है जो कोई या कहता है कि "मैं तो अपना ही हूँ तो यह सब मूढ़ है। स्वयं को छुपाने और अस्वयं को बताने का मरस जादू है। इस जगत में कोई किसी का हुआ है क्या ? तब शरीर के लिए अंगों को उठाये, कठिनायों की घाटियों को पार करते रहें किन्तु समय आने पर यह शरीर परलोक का पाठ पढ़ाते हुए शिवा देता है कि भगवाण भाई कौन किसका है ? स्वयं ही स्वयं का है। स्वयं को छोड़कर दूसरों के पीछे दौड़ना और चलित सम्पत्ति को छोड़ते रहना किन्तु भक्त म तेरा कौन ? इसीलिए स्वयं को ही स्वयं का मानकर उसके अनुसार प्रवृत्ति करना यही श्रेयस्कर है।

ॐ

### स्वयं कैसे

मसार में प्रत्येक प्राणी की प्रवृत्ति भिन्न भिन्न प्रकार की होती है इतनी विनाश सख्या वाली प्रवृत्ति की गिनती करना असंभव है तो भी इन सब को चार विभागों में समायोजित किया जा सकता है शैतान है मानव आत्मा और भगवान् अथवा अरम, मध्यम, उत्तम और उत्तमोत्तम। जो स्वयं रोता रहे वह शैतान, जो दूसरा को मलाता



## जीवन मन्त्र

गे वह हैवान जो हमेशा प्रसन्न रहता है यह इंसान,  
 और ना पस न रहता है और प्रसन्न रहता है यह  
 भगवान, जो दूसरा का विनाश कर रख ये ही श्राव्य  
 का साधना रहता है यह अधम, जो मात्र स्वयं क स्वार्थ  
 को ही साधता है यह मध्यम, और दूसरा का रित  
 ध्यान में रखने हुए स्वयं का स्वार्थ साधता है यह (इन्सान)  
 उत्तम का स्वयं की चित्त छोड़ कर प्रत्येक क हित में निरत  
 रहता है वह उत्तमोत्तम । जीवान आर्त ध्यान में रहता है  
 और निर्यत्न गति में जाता है । हेवन रोद्र ध्यान में रहता  
 है नरक गति का संहमान बनता है । इन्सान धर्म ध्यान  
 में ही लगा रहता है जन उस मनुष्य गति अथवा देव  
 गति प्राप्त जाती है । भगवान तुकल ध्यान में लीन रहत  
 हैं व वे मास की प्राप्ती होती है ।

५५

## भावना का चदन

मनुष्य उसे उच्च जीवन शीघ्र म दुभावना क  
 उदरशील वाकलिये कभी नहीं जाना चाहिए । इसमें  
 ना परम शक्ति प्रद और मरत परिमल फैलाने वाला  
 सद्भावना क चदन वच ही शामा ले सकत है । मलया  
 गिरि पर चन्दन वृक्ष ही होते है परागत हाथी पर लफडी  
 ना बोभा रखना क्या हास्यापद नही ? मनुष्य क मन  
 में प्रत्येक जीव मात्र को परम शक्ति प्रदान देने वाला  
 भावना का चदन ही होना चाहिए ।

## जीवन मन्त्र

### जीवन पथर नहीं, चिन्तामणि

जीवन भार भूत पथर जैसा नहीं मार भूत चिन्तामणि जैसा है जिस व्यक्ति के जैसे विचार हों उस तरह उमड़ी गति हो जाती है परिणाम भले ही मरारा हो किन्तु वह स्वयं का आदत को छोड़ना नहीं चाहता दुष्परिणाम को लाने वाले विचार और प्रवृत्ति प्रत्येक मनुष्य को छोड़ना चाहिए। दुष्परिणाम जनक प्रवृत्ति बन वाता जीवन को पथर जैसा बनाता है, मत् प्रवृत्ति का करने वाला चिन्तामणि जैसी अभूत शक्ति वाला जीवन बना सकता है।



### राग और त्याग

ससार क सताप और अशान्ति स भरे हुए धाता-धरण में किसी भी मलय आमा को सुख प्राप्त नहीं हुआ और न हो सकता है। परम ज्ञाना विश्व धामल शीतराग द्वारा गानि का जो माग बताया गया है ज्यो माग पर चलने के पर्यान् ही परम आनन्द प्राप्त हो सकता है, यह माग है परिग्रह का त्याग और मतोप का राग। बढ़ते हुए मगडे और विवादा का मुख्य कारण यह परिग्रह का राग ही उसमें बैठा हुआ है।

## जीवन मन्त्र

### व्यर्थ

- बिना नियम का जीवन व्यर्थ है ।  
बिना दिन का दिन व्यर्थ है ।  
बिना विवेक का जीवन व्यर्थ है ।  
बिना ज्ञान के जीवन अधकार मय है ।  
ध्यान के बिना सिद्धि में गड़ा पत्त है ।  
बिना त्याग का समझ व्यर्थ है ।  
बिना राग का वैराग्य व्यर्थ है ।  
बिना भाव की भक्ति व्यर्थ है ।  
समय को समझे बिना शक्ति व्यर्थ है ।  
बिना बुद्धि का धन व्यर्थ है ।  
बिना विद्या का विचार व्यर्थ है ।  
बिना समझे का आचार व्यर्थ है ।  
बिना चेतन का पुद्गल व्यर्थ है ।  
बिना समझ की सामर्थ्य व्यर्थ है ।  
सत्प्रयोग बिना धन का मूल्य व्यर्थ है ।  
बिना विद्या की किशोरावस्था व्यर्थ है ।  
बिना पुण्यार्थ की जवाही व्यर्थ है ।  
बिना संगठन का सामूह व्यर्थ है ।  
बिना शक्ति का स्थान व्यर्थ है ।  
बिना सद्भावना की मित्रता व्यर्थ है ।

ॐ

## जीवन मन्त्र

### मुक्त विहार

माया का चक्र और स्वार्थ की श्रमला इतनी बुरा होती है कि इसको भेदने और छुड़ने के लिए स्वयं परिश्रम, शक्ति और धृष्टा को केन्द्रित करना आवश्यक है जब ही माया के चक्र का उन्मूलन और स्वार्थ की साकल का भेदन व्यवस्थित हो सकती है तब ही मुक्त विहार और पवित्र विचार के माय जीवन व्यतीत करने का सामर्थ्य प्राप्त हो सकता है। आत्मा में अनन्त शक्ति है पुनर्पार्थक द्वारा प्रारम्भ को अपने अनुकूल बना लेना यह स्वयं के ही हाथ की बात है।

५५

### जो जैसा मिले उसे वैसा

जो करोगे नमस्कार तो मिलेगा सत्कार जो नमस्कार नहीं करोगे तो जीवन पथ अधकार से छा जायेगा। नमस्कार करने से मारा समाप्त नम जाता है परमेष्ठी भगवतो के चरण पवित्र हैं, इतना ही नहीं किन्तु तारने वाले शक्ति शाली भी हैं, इनके शरण में जो जाता है वह अभय और निर्भय बन जाता है क्योंकि जिसके पास जो हो उसके पास में वही मिलेगा।

## जीवन मन्त्र

### राम विराग और त्याग

राम विराग और त्याग दुनिया के प्रत्येक प्राणी में इन तीनों में से कोई एक अवश्य होना है। परम श्रेष्ठ परमात्मा के चरणों में सर्व समर्पित करने की प्रवृत्ति या आदिभाव कहा तक नहीं हो कहा तक उसका भेद नहीं समझा जा सकता। भय अर्थात् सत्कार प्रिय प्राणी राम की ओर आकृष्ट होते हैं, भय से आगे भाव तरफ लीन आत्मा को विराग प्रिय होता है, तथा त्याग वही करता है जिसे स्वभाव प्राप्त करने की इच्छा हो।



### मन और आत्मा

मन और आत्मा दोनों पृथक् पृथक् हैं। मनन मन से होता है, भाव आत्मा में जागृत होते हैं, भाव स्थिर जब तक रहते हैं तब तक मनन उपरांत जैसे विचार धारा बढ़ती जाती है वैसे वैसे पूर्व का विभव और पीछे से आदिभाव होता जाता है, विचार जल जैसे तरंगी होते हैं। भाव मनु जैसे अडिग होन हैं। भावों की उत्पत्ति और विकास का क्षेत्र आत्मा है विचारों का आदिभाव और विकास मन का क्षेत्र है। मन की चंचलता, क्षण, क्षण में चलती रहती है तथा भावों की गम्भीरता सदा एक जैसी रहती है।

## मेरी कामना

हे आराध्य स्व ! मुझे चंचल स्वभाव वाली लक्ष्मी की आवश्यकता नहीं है मुझे चाहे जिस आत्म गुणा का परम श्रेष्ठ धर्म मुझे नहीं चाहे जिस भगवान महलात के बगले, चाहे जिस केवल स्वभाव स्थित स्वयं का घर बाघ सुख की अशभाव कामना नहीं है कामना है स्वभाव में रमण कर तमय होने की और कल्याण मार्ग को माध लेने की।

५५

## ज्ञाता और दृष्टा

अरे आत्मा ! मन क इस जल तरंगी स्वभाव क कारण बहुत कुछ लो दिया है और फिर उसी की तरफ-दारी की तरफ प्रवृत्ति कर रहा है तू ! इसका कारण यही है कि अभी तक तुझे स्वयं की स्थिति का ज्ञान नहीं तू ज्ञाता होकर भी अज्ञात बन रहा है । तू दृष्टा हाकर भी और मिचौली कर रहा है । तू सर्व शक्ति सम्पन्न होने हुए अशक्त बन रहा है, तू शाश्वत है, देह नश्यत है, तू सच्चिदानन्द स्वरूप है देह नाश्वत है ऋदाध्यास के कारण तू अपने स्वरूप से डर रहा है किन्तु अन्त में तो तुझे इस देह आनदी दगा का त्याग तो करना ही पड़ेगा ।

## दो पाँचे

एक पक्षी म पक्षी उड़ नहीं सकता है, यह स्वयं के दोनों पंखों की शक्ति का आधार पर ऊँचे आकाश में मरलता से उड़ सकता है, इसी प्रकार ज्ञान और क्रिया दोनों जीवन में जन तक आ नहीं पाते यहाँ तक यह आत्मा स्वयं के श्रेष्ठ पथ पर अबाध गति से नहीं चल सकती ।

५१४

## उज्ज्वल भविष्य

जिसका मन न्न होता है उसे धर्तव्य पालन की शक्ति लगी रहती है । जिसका वचन निश्चल है उसके एक एक शब्द में जागरण की बुद्धि भी बचती रहती है । जिसका शरीर स्वस्थ है वही सेवा, धर्म को अच्छी प्रकार से कर सकता है । इस प्रकार मन दृढ़, वचन निश्चल और शरीर स्वस्थ है । ऐसे ही काय कता शासन का भविष्य उज्ज्वल कर सकते हैं ।

## नेता की योग्यता

नेता अर्थात् लं चाने बन्ने, नेता पर प्रयत्न का विश्वास होता है, परन्तु कब जेव नेता जागृत दिल का होता है। मुद विचारा का नेता प्रयत्न को मुदा घना देता है जिसमें प्रतिभा और ध्यान होता है इतना ही बलि समय आन पर जो प्रत्येक से जगाने की शक्ति रगता है वही नेता बनन की योग्यता रग सकता है। नेता बनाने क पूर्व जनता से रूब सम्भीरना पूर्वक विचार कर लेना चाहिण और नेता बनने क पूर्व स्वय उम्मीवार का रग विचार कर लेना चाहिण। तो ही अनुग सन पूर्वक मच कुछ हो सकता है



विदु मत्र

नीचे की ओर दीडना सब क लिये सरल है किन्तु आगमना के पहाड़ के उपर चढ़ने वाले कोद एक बार ही मिलते हैं। ज्ञान हेतु शका की वा मकनी है परन्तु ज्ञान में कहीं भी शका को स्थान नहीं है।



मुनिराज श्री जयन्तत्रिनयजी द्वारा लिखित तथा

### मुम्पादित-साहित्य

* वीरूप प्रभा	(कथा साहित्य)	
* भक्ति सुधा	(भक्ति गीत)	
* आत्म दर्पण	मननीय लेखन	० ५०
वारसमखि	हिन्दी, गुजराती	०-२५
जीवन मंत्र	" "	१-५०
अधारे दीवा	" "	०-२५
मोनेरी सभारणा	गुजराती	०-२५
प्राचीन पारमनायतीर्थ	" "	० ५०
गुरुदेव पुष्पाञ्जली	" "	० ५०
भक्ति रस गगन	हिन्दी	० २५
स्वाध्यय सौरम		१-००
शेवजन्दनमाला	( गुजराती )	२ ००

\* इस चिन्ह वाली पुस्तकें स्टॉक में नहीं हैं ।

—प्राप्तिस्थान—

श्री यतीन्द्र - साहित्य - सदन

सरस्वती-विहार, भीलवाडा

# मुनि श्री जयन्तत्रिजयजी

‘मधुकर’-माहित्य

—\*—

पीयूष प्रभा	—
भक्ति सुधा	—
आत्म दर्पण	० ४०
पारममणि	० २४
नीयन मंत्र	१ ५०
अगर दीपा	० २४
मोनेरी नभारणा	० २४
प्राचीन पारमनाथतीय	० १०
गुम्फेय पुष्पावली	० १
भक्ति रस गंगा	० २४
स्वाध्याय मीरभ	१ ००
श्रवणमाला	२ ००

प्राप्ति स्थान —

यतीन्द्र माहित्य सदन

मरुस्थली विहार, भालवाड़ा